आइ भोर

□

डा० श्री गंगेश गुंजन

पात्र :

युवक

मंचक व्यक्ति

किशोरी

रमेश

नीरा

अमर

चारिगोट अन्य व्यक्ति

□

पहिल दृश्य

(एकटा साधारण पार्क ! पाँच-सात गोटे हाफी क' रहल छथि-- अईंठी मोड़ क' रहल छथि । क्यो-क्यो मुँह बाबिक' चुटकी बाजा रहल छथि । दू-तीन टा बेंच रहलाक बादो ओहिपर क्यो बैसल नहि छैक ।

पैंतीस-सैंतीस वर्षक एकटा युवक, जे चिन्तित अछि आ ओकर स्वास्थ्य साधारण छैक, अपन कमीजक हाथकें ऊपर मोड़ैत मंचपर पार्कमे अबैत अछि । ओकर बामा हाथमे एकटा झोरी लटकल छैक। ओ सभ लोककें अनचिन्हार जकाँ देखैत अछि । फेर एकटा बेंचपर बैसि क' कोनो दिस देख' लगैत अछि । किछुए छनमे उठिक' दोसर दिस बढ़ि जाइत अछि । फेर घुरिक' ओहि बेंचपर पयर ऊपर क' बैसि जाइछ जे अपेक्षाकृत दर्शकलोकनिक लग पड़ैत छैक । हाफी करैत अछि । जेबी हथोड़ैत अछि । चेष्टासँ बुझाइत छैक ओ सिकरेट ताकि रहल अछि । नहि छैक सिकरेट । ओ निराश भ' क' कात महक लोकमे एक गोटेपर, फेर सभ गोटेपर, अपेक्षासँ आँखि घुरबैत अछि । एक आँघा रहल अछि । तकरा देखिक' ओ व्यंग्यसँ बिहुँस' लगैत अछि । फेर अनेरो उदास भ' जाइत अछि, ममतासँ । उठिक' जहिना लग आब' चाहैत अछि कि दू गोटे भय या सन्देहसँ सिटपिटा-जकाँ जाइत छैक ओकरा देखिक' । ओ ताहिपर बिहुँसैत अछि आ अपन बेंचपर घुरि, आबिक' बैसि जाइत अछि चिन्तित भावें-पयर पसारि क' । फेर जेबी तकैत अछि आ एकटा मोचरल कागजक टुकड़ी बाहर करैत अछि । सोझ क' क' ध्यानसँ पढ़बाक यत्न करैत अछि । ओकर आँखिमे बड़ प्रिय चकमकी छैक । प्रकाश, ओकर अनेक झूकल आकृति पर तेहन क्रमसँ पड़ि रहल छैक जे ओकर आँखिक ओ चमक दर्शकसभ देखि दैत छैक । ओ ओकरा पढ़िते काल उद्विग्न जकाँ भ' जाइत अछि । ओकर आकृति मिझा जाइत छैक । ओ मुट्ठीमे पुर्जा लेने पहिने लगक लोकसभ दिस, फेर दर्शक दिस दूर-दूर धरि देख' चाहैत अछि । ओकर आँखि असहाय जकाँ लगैत छैक । दुनू हाथकें कब्जा लग तेना भ' क' ऐंठिक' पेटक नीचाँ झुला लैत अछि जे ओकर विवशताकें आर

देखार क' दैत छैक । ओ शान्त उत्तेजित स्वरें दर्शककें सम्बोधित करैत अछि । पृष्ठभूमिसँ कोनो समारोहबला लाउडस्पीकरपर उल्लासक गीत बाजि रहल अछि । अकस्माते दर्शककें सम्बोधित करैत अछि ।)

युवक– अहाँ सोचि सकैत छी, हमर हाथक एहि पुर्जामे की लिखल भ' सकैत अछि ? अहाँ नहि सोचि सकैत छी । (क्षणिक चुप्पी) अहाँ कहि सकैत छी, अपन देशक सम्पूर्ण आबादी कैक हिस्सामे बाँटल अछि ? (क्षणिक चुप्पी) मुदा अहाँ एहि बँटबाराक बात सेहो नहि कहि सकैत छी ?

(ओकरा एना भ' क' जोरसँ बजबापर झुकि रहल लोक ओकरा बताह बुझैत आशंकामे तन्द्रा तोड़ि सजग भ' जाइत अछि । मंचपरक लोक सभमेसँ तीनटा ओकरा ध्यान द' क' देख' लगैत छैक । ओहीमेसँ एकटा बड़बड़ाक' पूछ' लगैत छैक)

दोसर पुरुष–अहाँ ककरा कहि रहल छिऐक ? हमरा ?

(युवक ओकरा नहि सुनैत छैक, कहिते रहैत छैक ।)

युवक– अपने देशक सम्पूर्ण आबादी दू हिस्सामे बाँटल अछि । रोटी आ कवितामे । (चुप्प भ' जाइत अछि । फेर तुरन्त कहैछ) अहाँ उदास भ' गेलहुँ ? रोटीक बातपर कि कविताक बातपर ? (दर्शकसमूह दिस देखैत । हाथक स्थिति पूर्ववते छैक । ओकर ठाढ़ होयबाक ओहि ढंगसँ बुझाइत छैक जेना ओ माटिमे गड़ल एकटा हाथ-बन्हायल मूरुत हो । लगक लोक एकरा लग अयबाक इच्छा राखितो लगमे अबैत नहि छैक । पार्कमे पड़ल लोकसभमेसँ एकटा माथ तरमे पोथी जकाँ किछु दबाक' पड़ल रहैक जे उठिक' ठाढ़ भ' गेलैक । युवकक लगमे, तथापि ओ अबैत छैक । बगलमे ठाढ़ भ' जाइत छैक । ओ ओकरा छुबैत छैक)

तेसर लोक–अहाँ ककरा कहि रहल छिऐक ? के अछि ओहि दिस ? अहाँ हमरालोकनिकें किऐक नहि कहि रहल छी ?

युवक– (ओकरा व्यंग्यसँ देखैत) अहाँ किऐक नहि बुझैत छी जे अहाँ कें कहि रहल छी ? अहाँकें अपना सोझाँमे किछु नहि देखाय पड़ि रहल अछि । आगाँ दिसक' झुकल बैसल ओ ओत, ओहि दिस एकटा पूरा परिवार, नहि देखाइ पड़ैए अहाँकें ?

तेसर आदमी–अहाँ प्रचण्ड लगैत छी भाइ साहेब ! क्षमा करब । (ओ ससरि जाइत अछि अपन स्थान दिस । युवकमे एकर किछु प्रतिक्रिया नहि होइत छैक । परंच फेर तुरन्त जाइत ओहि व्यक्तिकेँ खिसिया जकाँ दैत अछि)

युवक– सुनू । अहाँकेँ सत्ते किछु नहि देखाइए ? किच्छु नहि ? विचित्र बात अछि । अहाँक जेबीमे कोनो पुर्जी नहि अछि ? आ कि अहाँ तकरा बिसरिक' प्रकृतिक आनन्द उठा रहल छी ? (व्यंग्यसँ ओ व्यक्ति ओकरा आश्चर्य आ डरसँ देखैत चल जाइत छैक । युवक किछु नहि कहैत छैक, मात्र भर्त्सनाक आँखिये देखैत छैक)

युवक– हम अहाँकेँ आदमीक मनक भूगोल बुझा रहल छी । (प्रस्ताव करबाक मुद्रामे नम्रतासँ) बेस, ई कहू जे अहाँ हमरा आन तँ नहि बूझि रहल छी ? अपन बूझिक' हमर बात सुनि रहल छी ने ? जेना एखन जे, हम अहाँकेँ कहि रहल छी तकरा बकबाद तरहक गप्प नहि ने मानि रहल छी ? ई बात एहि दुआरे पूछि रहल छी जे अहाँसँ हमरा भेँट भ' गेल अछि । (क्षण भरि चुप्प) बनियाँसँ हमर भेँट नहि भ' सकल । ओ गेल अछि कतहु माल उठब' । नोकर कहलक ।

[बड़ सूक्ष्म स्तरपर किराना दोकानक ध्वनि-प्रभाव, जेना युवक अनुभव क' रहल हो, तेहन सन बुझाइ पड़ैछ]

युवक– जखन हम डेरासँ चलल रही तँ पत्नी चूल्हि धराब' बैसलि छलीह । (हँसी) हुनका भरोस छलनि जे हम आधा घंटामे घुरि क' पहुँचि जायब डेरा । हम जनैत छिऐक । (क्षण भरि सोचैत चुप्पी) एखन ओ गरम त'बकेँ चुल्हिपरसँ उतारिक' माँटिपर धरैत होयतीह आ भरल बर्तन पानि चूल्हिपर चढ़बैत होयतीह । फेर ओकरो उतारिक' पझाइल जा रहल चूल्हिकेँ देखि रहलि होयतीह । क्रोध आ लाचारीमे हमरापर खौंझा रहलि होयतह (अन्यमनस्क जकाँ होइत) एक टा तँ छोटकी अछि । ओकरा हम बड़ स्नेह करैत छिऐक । पत्नी भोरे-भोरे ओकरा दू चाट मारलथिन । (आकृति किंचित तनि जाइत छैक) हमरा बड़ क्रोध उठल । ओकरा बड़ जोड़ भूख लागल रहैक, ओ दूक बदला चारि टा रोटी मङलकनि । आब अहाँ लग रोटी नहि अछि ताहि लेल उत्तरदायी ओ अछि बेचारी बालबोध ?

आ, यदि अहाँ माय छी तँ अहाँक जिम्मा रहबेक चाही रोटी । यदि रोटी नहि अछि तँ अहाँ माय कोना भ' सकैत छी ?

(लगबला लोकसभ चुटकी बजा-बजाक' हाफी करैत अछि । पार्क शहर मध्यमे छैक, कतहु तँ पष्ठभूमिसँ ट्राफिकक स्वर । युवककेँ जेना फेर किछु मोन पड़ि जाइक । कह' लगैत छैक)

युवक– हम लिखैत रही कविता । अहाँकेँ आश्चर्य होयत । हम स्वतंत्रताक रजत-जयन्तीपर कविता बना रहल छलहुँ । एकटा कवि सम्मेलनमे जयबाक रहय ।

बाड़ी आब बाड़ी भेल अछि
ओड़हूलक गाछ उगि आयल अछि
हमरा दरबज्जापर लाल सूर्य ठाढ़ भेल अछि ।
हरियरीक पाकल जंगल लतरि गेल अछि
आ फूल-फड़क सिलसिला
घरे-घर पहुँचल अछि अनाजक ढेरी....

[एक क्षण चुप रहिक' फेर पुर्जी देखबैत बाज' लगैत अछि ।]

युवक– ई जे हमर हाथमे पुर्जा अछि ताहिपर इहए कविता छैक । तखने छोटकीकेँ पिटैया भ' गेलैक....(दैनन्दिनक किछु घरौआ गारि-शाप 'मरियो ने जाइत अछि' 'अभगली' आदि ध्वनि तथा थापड़ मारबाक स्वर ऊँच स्तरपर । ओकर आकृतिक भावसँ लगैछ जेना ओ फेर ओही मनःस्थितिसँ गुजरि रहल अछि, कोनो पार्कमे नहि, अपितु अपने असोरापर हो । ध्वनि आयब खतम)

युवक– हमरा क्रोध आबि गेल । बन्द कयलहुँ कविता (क्रोधमे) आ जोरसँ डँटलियनि पत्नीकेँ । मारबोक इच्छा भेल । मुदा आइ-काल्हि हुनका बोखार लागल छनि । मात्सर्य भ' गेल । पीबि गेलहुँ क्रोध केँ (पराजित जकाँ) कहलियानि–'कहू, की सभवस्तु-जात चाही ? लिखाउ फिरिस्त । देखिऐ दोकान जाक' । सैह फिरिस्त अछि । (हँसैत किंचित) कविता आ फिरिस्त । तेना भ' क' लिखकछैक जे पढ़' लागी लगातार तँ लागल जेना ई फिरिस्तक कविता थीक–

''बाड़ी आब बाड़ी भेल अछि
ओड़हूलक गाछ उगि आयल अछि

हमरा दरबज्जापर लाल सूर्य ठाढ़ भेल अछि ।
हरियरीक पाकल जंगल लतरि गेल अछि
आ फूल-फड़क अन्तहीन सिलसिला
घरे-घर पहुँचल अछि अनाजक ढेरी....
गहूम पन्द्रह किलो
चाउर डेढ़ किलो
हरिद पचास ग्राम (नहि एखन एकरा काटि दियौक)
नोन एक किलो ।
मसल्ला सभ किछु मिलाक'
अढ़ाइ सय ग्राम ।
नै नै एकरा एखन काटिए दिऐक !
आ तेल द्‌ू कनमा । बस''

(युवक चुप भ' जाइत अछि । फेर बाज' लगैत अछि)

मासक अन्त छैक । अगिला मासक दरमाहा भेटत तँ पुरा महीनाक आश्रमी वस्तु-जात आबि जायत । आ फेरो उधारीक मामिला अछि। बनियापर निर्भर छैक । देअय, नहि देअय । अपन हाथ ? जेना एखन ओ माल उठन्न' गेल अछि । हम ओकरा प्रतीक्षामे एत' पार्कमे बैसल छी । जानि नहि कखन घूरत । ओकरा तँ गरिअयबाक इच्छा होइत अछि । परंच ड'र होइ-ए ! अहाँकें विश्वास नहि होयत। (जेना कोनो रहस्यक बात बुझा रहल हो ताहि मुद्रामे) ओकर इष्ट-अपेक्षित सर-सम्बन्धीक सभ पार्कमे, सनिमामे, स्टेशनबला महावीर-मन्दिरमे, गंगाकात, सभ ठाम रहैत छैक । बैसल । (कहैत-कहैत ओ व्याकुल जकाँ भ' उठैत अछि । बगलबलाकेँ देखैत छैक) ''ओना, बजै-ए कतेक माइजी'' ।

तेसर लोक–आठ । (ओ उदास हँसी हँसैत अछि । फेर कह' लगैत छैक)।

युवक– हम जनैत रहिऐक । जनैत रहिऐक ई बात । देब' चाहितय तँ ई एहन जरूरी वस्तु-जात ओकर मैनेजर नहि द' सकैत छलय ? ओ कि कोनो नहि चीन्हैत अछि हमरा जे ओकरे दोकानसँ उधारी खाइत छिऐक ? फूसिए मालिकक लाथ, जे मालिक नहि छथि । (विवशतापूर्ण आकृति भ' जाइत छैक ओकर) एहना स्थितिमे हम की करितिऐक ?

हम एत एहि ठाम नहि आबिक' बैसि जइतहुँ अहाँसँ नहि गप्प करितहुँ आ अपन दुख नहि सुनबितहुँ तँ की करितहुँ ? (क्षण भरि चुप्प) आ हम अहाँकें सत्ये कहैत छी । हम तावत धरि एत' रहब जावत धरि तीनू नेनासभ जेना-तेना हमर आशाबाटी तकैत, कनैत-चुप होइत, सूति नहि रहय, आ हमरा स्त्रीक तामस ज्वरमे नहि दबि जाइनि । तकर अन्दाज हमरा अछि । हम एतहि बैसल-बैसल बूझल बूझि जयबै पूरा । हमहीं की, अहूँ बूझैत होयबै । ओ, अहाँमे आ हमरामे भिन्नते की अछि ? मात्र एतबे तँ फर्क अछि–अहाँक घरमे गहूम पहुँचि चुकल अछि आ हमरा घरमे पहुँच' बला अछि । अहाँक पत्नीसँ अहाँकें दोसर तरहक लड़ाइ होइ अछि, हमर दोसर तरहक । अहाँ अपन बच्चा-सभकें ओ वस्तुसभ द' लैत छी जे हमरा अपन बच्चासभकें देब बाँकी अछि । (फेर जेना किछु सोचिक') ओना हम तुलना नहि क' रहल छी । तुलना की करू ? जान अगुता गेल । आइ रवियो छैक । दोकानो आठे बजे बन्न भ' जाइत छैक । (किचकिचाक' जेना) की-की नियमसभ छैक ! जीबाक हेतु गुंजाइश तँ सुइक नोक भरि आ प्रतिबन्ध पूरा-पूरी एक समुद्र भरि ।

मंच परक क्यो एक टा हड़बड़ायल सन क्रमे बजैछ–''अरे-अरे, हमरा कते आवश्यक वस्तु-जात किनबाक छलय ! तरकारी....। हम तँ बिसरि गेलिऐक । (किछु क्षण चुप रहैत, नापरवाहीसँ) जाय दैह.।

युवक– बेस अहाँकें नहि लगैत अछि एहन ।

सभ स्वर–की ऽऽऽ ? (कोनो जिज्ञासाक, कोनो खिसिआयल, ककरो आतंकक, ककरो क्रोधित आ ककरो डेरायल स्वर)

युवक– बहुत प्रतिबन्ध अछि हमरालोकनिक ऊपरमे ? हमरालोकनिक एकसँ एक सुन्दर इच्छापर, हमरा सोचबा तथा करबापर, मुँहपर, हाथपर, आ मस्तिष्कपर । अहाँके नहि बुझाइत अछि ? (ओ बड़ उद्विग्न भ' उठैत अछि आ जेना एक्के स्थानपर बड़ चंचल भ' जाइत अछि । फेर करीब-करीब सभक उपस्थितिकें बिसरिक' एक दिस देखैत अछि)

दोसर लोक–अहाँक माथ बड़ ओझरायल आ व्यग्र अछि । (ई संवाद ओ बड़ सुभ्यस्त भावें बजैत मुँह-फाड़ हाफी लैत छैक । फेर आँगा

कहैत छैक) अहाँ घर जाउ आ खा-पी क' सुति रहू ग' । निन्न भ' जायत तँ नीकेँ भ' जायब ।

[युवक धधकैत आखियेँ देखैत छैक ओकरा, ओहि हमदर्दकेँ । मुदा, ओकरा किछु करैत नहि छैक । ओ सहमि जाइत छैक ।]

युवक– उपदेशक हेतु धन्यवाद । (भ' हुँ पर जोर दैत) मुदा, अहाँ हमर बातसँ ई सोचैत होइ जे किछु अधलाह वा जकरा अहाँलोकनि सामाजिक भाषामे कहैत छिऐक बताहपनीवला उन्मादी बात, से नहि थिक । हम से नहि छी । (चुप, फेर एकटा थकनीक संङ । अपितु हमहुँ अहीँ जकाँ कविता आ रोटीक बीचक समुद्र हेलि रहल छी । थाकि रहल छी तैयो लगातार हेलि रहल छी । (छी-सारा अक्षर बाजल जा सकय ततेक क्षणक चुप्पी) हमर स्त्री कहैत छथिन हेलनिहारक लेल समुद्र बड़ छोटा होइत छैक । आ सेहो, हम अहाँ सङे छी । अहाँक ई नेनाभुटका सभ अछि । चिन्ता कथीक ? बड़कू तँ पाँच-दस वर्षमे तैयार भ' जायत....(टुटैत स्वर) मुदा, सेह तँ छैक । हम ओकरा कहि नहि सकैत छिऐक । हम समुद्रो हेलू आ कन्हा परसँ इहोसभ उतारू से कतेक भयावह बात छैक ? (हताश स्वरेँ) साज लागल घोड़ा जकाँ चारा लेब-पानि पीयब....। (क्षण भरि चुप्पी) केहन कठिन अछि जे आइयो अपना बीचक ई अन्तर फानि नहि पबैत छी । जत' हमर मन अछि आ हमर संसार । हम जनैत छी, वैह संसार बहुतो लोकक छैक । मुदा तैयो कतेक दूरी छैक ? ई दूरी प्रतिदिन बढ़ल जा रहल अछि । जेना सभ दिन आयु घटैत जा रहल अछि ।

मंचक कोनो एक व्यक्ति–के कहैत छैक उमेर घटि रहल छैक ? आब तँ औसत आयु बेस जोरसँ बढ़ि रहल अछि । आँकड़ा छह बूझल ? कहियो अखबारो पढ़ैत छह ? रेडियो सुनैत छह ? (सगर्व चुप भ' जाइत अछि)

युवक–अहाँ अधलाह मानि गेलहुँ भाइ ! नहि । एहि दुआरे नहि कहलहुँ । हम तँ....अपन समस्यामे अहूँकेँ संग बूझिक' ई बात कहलहुँ । अहाँ चाही तँ हमरा डाँटि सकैत छी । हम सहि लेब । फाइलमे गलत क्रमसँ एक्को बेर चिट्ठी लगा देलापर बाँस हमरा डाँटि दैत अछि । हम ओकरा कहैत छिऐक जे हमरासँ ई काज नहि होइत

अछि तँ हुरपेटि दैत अछि । घृणासँ स्वाड़ा क' देब'वला आँखिसँ हमरा देखैए । आ, सप्ताहमे तीन बेर मेमो देबाक धमकी बोकरैए । ओकर तागति चलै तँ ओ हमरा ओहीक्षण नोकरीसँ निकाल बाहर क' देअय । ओही क्षण । परंच हमरा लगैए जे ओहो बेचारा बड़ प्रतिबन्धमे अछि । (क्षण भरि चुप रहिक') लोकसभ कहैत अछि हमरा–तोँ स्थायी सरकारी नोकर छह । ककरो बापक दिन नहि छैक जे बिना कोनो जबर्दस्त कारणकेँ क्यो तोरा नोकरीसँ निकालि देतह । हम यदि एहन एक टा कारण चाहितो छी तँ बना नहि पबैत छी । कारणो कि तुरन्त बनि पबैत छैक ?

क्यो एक व्यक्ति–(जेना मच्छड़ मारैत) मतलब ? कथीक कारण ?

युवक–(धनसन जकाँ) हमरा यदि नोकरीसँ निकल' पड़य तँ हमरा पत्नी केँ ई शिकाइत नहि भ' सकतनि जे हम ठीकसँ घरक इन्तिजाम नहि क' पबैत छी । बच्चासभकेँ, अपना आ हुनका नीक जकाँ खोआ नहि पबैत छी । शिकाइत कोना रहतनि ? जखन हम कमयबे नहि करब तँ खोअयबनि कोना ? आ तखन ककरो हमरापर आश्रित रहबाक अधिकारे कोना रहतैक ?

मंचपरक क्यो व्यक्ति–से ठीके कहैत छह । पुस्तकसभमे लिखल-छपल अधिकार आ सत्तेक भेटल अधिकारमे धरती-आकाशक फर्क होइत छैक । (युवक ओहि व्यक्तिकेँ प्रशंसाक दृष्टिसँ देखैत छैक । व्यक्ति चुप भ' जाइछ)

युवक–एम्हर सुनैत छी जे खेतसभमे जे फसिल क' क' उपजबैत छथि, बटैदारक रूपमे आब सरकार हुनकेलोकनिकेँ ओहि जमीनक अधि कार द' क' मालिक बना देलकनिहेँ । आब ओएह किसानलोकनि ओकर मालिक छथि । जोतथु-कोड़थु । अन्न उपजाबथु आ खाथु पिबथु । मौजसँ रहथु । मुदा सरकार की अखबार आ कि रेडियो कि सभासोसाइटीमे एहि अधिकारक प्रचार होइत रहलाक बादो, आइयो कि सभ बटैदार, बटैदारे मात्र नहि छथि, बेधर बेजमीन भूखल आ मुँह तकैत ? (ओ जेना दर्शकसँ पुछि रहल हो, तहिना ओहि दिस देखैत । क्षणिक चुप्पी ।)

(मंचक एक व्यक्ति लगातार खोंखी कर' लगैत छैक, युवक एक बेर देखिक' ओकरासँ बजैत अछि)

युवक- आ कि कार्यालयेकेँ लिय' ने ! सभ कर्मचारी सरकारक छैक अथवा प्राइवेट लिमिटेड । समान । खाली उत्तरदायित्वसँ भिन्न । सभकेँ जीवन-यापन आ अनुशासनक समान अधिकार । परंच, छोटछिन किरानी वर्गक लोक कि दस बजेक स्थानपर एगारह बजे अयलापर बिना अपना हेडकेँ 'जबाब' देने अपन कुर्सीपर जाक' बैसि सकैत अछि ? ओकरा बैस' देल जयतैक ? जखन कि अहूँकेँ बूझल अछि, कार्यालयक हेडक चेम्बर घण्टा भरिका बाद खुजैत छैक, पहिने बन्द भ' जाइत छैक कि नहि ? अधिकार आ अनुशासनक नामपर क्यो ओकरासँ किछु पूछि सकैत छैक ?

एक व्यक्ति अप्रत्याशित-अहूँक बॉस आदर्श बॉस अछि की ? ओहो चरित्र आ समय वा देशभक्तिक महत्त्वपर नित्य मीटिंग करैत अछि की ? (युवक मात्र सहमतिक दृष्टियेँ ओहि व्यक्तिकेँ देखैत छैक)

युवक-ओकरासँ क्यो नहि पूछि सकैत छैक । जखन कि ओ एसभसँ पूछि सकैत अछि । ओ कहैत छैक जे ओ एही बातक लेल एत' बैसाओल गेल अछि । एकरा ओ एडमिनिस्ट्रेशन' माने प्रशासन कहैत छैक । (व्यंगसँ) प्रबन्धक नामपर ओ मनमाना तन्त्र चलबैत अछि । आ प्रशासन-तन्त्रक नामपर मातहतलोकनि कि तँ कोल्हुक बड़द बनल निबाहैत छथि, कि धड़केँ छथि पाठि लगाओल जा रहल बच्चा जकाँ आ पड़ाइत छथि । मुदा, पड़ाइ-ए के एहि बेकारी आर बढ़िते जा रहल नित्य-नित्यक महगीक युगमे ? ओ लोकनि परोक्षमे फदर-फदर क' क' बॉसक माय-बहिनकेँ गारि दैत छथिन आ सोझाँमे सलाम ठोकैत छथिन ! फेर संस्थानक साहित्यिक परामर्शदाताक ओहदापर सुशोभित रहैत छथि वा प्रमुख अभियन्ताक पदपर ।

दोसर लोक-(क्रोध तथा बेचैनीसँ) अहाँ तँ विचित्र छी औ । जानि नहि, कत सँ टपकि अयलहुँ । तखन उन्मादमे बकैत जा रहल छी । माथमे की अछि से किछु पते ने चलैए । (एक सेकेण्ड चुप रहिक' जेना ओकरा चुनौती दैत) अहाँके अछि पता, की-की बाजि रहल छी अहाँ ? आ ताहि बातसभक मतलब की छैक ? आ के सुनि रहल अछि ? (किछु बेसी अपरूपाँत भ' क') धिक्कार अछि । घर सँ बाहर धरि लोक पछाँ पड़ल रहैत अछि । एत' आबल रही

आफिससँ जे किछु काल सुस्तायब तखन जायब घरमे जर' । विचित्र समय अछि । मनुक्खक कतहु शान्ति नहि । ने घर, ने दफ्तर ने पार्क । (हाफी छोड़ते बजैत अछि) चलू भाइ । भगवान चाहलनि तँ अहाँ अतिशीघ्रे बताह भ' क' केश फहरबैत सड़कसभपर बौआयल फिरब । (ओ एक ठामसँ दोसर ठाम जाय लगैत अछि)

युवक- हमरा अफसोच अछि । भाइ साहेब (व्यंग्य आ आत्मविश्वाससँ) हमरा भारी अफसोच अछि । हम अहाँक भगवानक इच्छासँ बाहरक लोक भ' गेलहुँ अछि । अहाँक भगवानक इच्छासँ तँ हमरा पाँच-सात वर्ष पहिने बताह भ' क' सड़कपर आबि जयबाक चाहैत छल । किएक तँ हमरा मस्तिष्कमे एक टा बड़ महान कविता छल आ एक आदर्श लोक छल जाहिमे एखने ओ पहिल लोक आब' बला रहय, एहि पृथ्वी भरिक ओ पहिल लोक, जे कविता आ रोटीक बीचक समुद्र सोखि लेब' बला रहय । ओ चिक्कन-चुनमुन छायादार सड़क जोड़ितय जाहिपर निर्विघ्न लोक अपन-अपन इच्छाक गन्तव्य दिस जैतय (जेना स्वप्नमे होइत) मुदा, ओ पहिल लोक अपन मस्तिष्क, ओहि महान कविताक नावपर कनियोँ दूर नहि बहि सकल । दहा गेल । पहिल बेर माय-बापक भनसाघरक मिझायल चूल्हिक बाढ़िमे, आ दोसर बेर सामाजिकता, सांसारिकताक नामपर, एक नूआ, नव विवाहिताक मनोरथसभक रङल आँचरक लहरिपर । पाँच सात वर्ष पहिने....

एक व्यक्ति-(बड़ इतिहासज्ञ होयबाक गम्भीर मुद्रामे) हँ, देशपर आक्रमण जे भेल रहय पाकिस्तानक ? ओह ! भयानक छल....

युवक- (ओहि व्यक्तिकेँ उपेक्षासँ टारैत) तैओ अपस्याँत बूढ़ बाप जकाँ नेनासभक चिन्ता-फिकिर करैत छी 'फल्ला खयलक ? 'फल्लाँ खाक' सूतल अछि कि ओहिना सूति रहल ? आ कि फल्लाँ लग्घी क' क' सूतल अछि कि नहि ? फेरो ओछाओनमे करत ।' (एक क्षण चुप्पी विवशतासँ) एही छोट-छोट पारिवारिक चिन्तासभसँ मस्तिष्क दबायल अछि । कविता छटपटाइत आत्मा जकाँ बहुत दिन धरि रोगी शरीरमे जीबैत रहल, फेर नहुएँ-नहुएँ मर' लागल । (चुप्प होइत) हमरा मनमे हमर कविता मरैत रहल आ ठीक हमरा सोचमे हमर सन्तानक रोगी ठठरी जौर खट्टामे सड़ैत गेल । सोझाँ-सोझी ।

एही दरांपर सात-आठ वर्षक जीवन । (ई संवाद हताश श्वास लैते समाप्त होइछ, फेर क्षणिक अन्तराल । उपस्थित लोकमेसँ गोटेक आँखि क्षण भरिक लेल सहानुभूतिपूर्ण भ' क' अन्यमनस्क भ' जाइत छैक) ।

अहाँ हमर बन्धु छी, हम की कहू ? जीवनक अर्थ हमरा हेतु कोनो जनमाहु रोगीक सुतबाक एकटा जर्जर । चौकी भरि अछि–एक टा काठक तख्ती भरि । जाहिपर चिरं रोगी पड़ल अछि । सैह तख्ती थिक जीवन । जीवन आब कोनो नहि, एकटा रोगशय्या अछि ।

तेसरलोक–(खौंझी तथा उत्तेजनासँ) बड़ विचित्र बात अछि । की कविता आ तख्ताकेँ रहि रहल छह हौ ? जाह-जाह, घर जाह । गामपरस स्त्री आ बच्चासभ बाट नहि तकैत होयतह ? घर जाह । (क्षणिक चुप्पीक बाद) विचित्र लोकसभ अछि एहि संसारमे । हम तँ बातो नहि बुझि पबैत छिऐक । की बिनु-आधारक बात सभ छै ? पढ़ल-लिखल बिनु माथक बात । (भर्त्सनाक आँखिये ओकरा गुरड़ि क' देखैत) अहाँ चाहितहुँ तँ ओत ओहि दुरहा बेंचपर विराजमान भ सकैत छलहुँ (बेंच दिस आङुर देखबैत) मुदा जानि-बूझि क' कृत्रिम क' हमरो अशान्त करबाक लेल एतहि जमल रहलहुँ आ अपन प्रलाप करैत रहलहुँ (कटु होइत अहाँ बड़ दोषी स्वभावक छी औ, जरनियाह लोक ! अहाँके अपन पड़ोसीक चैन देखल नहि जाइ-ए ।

युवक–(हँस' लगैछ) पड़ोसी ? अहाँ किनकर गप्पा कहैत छी ? रामचन्द्र बाबूक गप्प अरे (ओ तँ बेचारा 'अजीब' अभागल अछि । अहाँ जनैत छी ?) जीवनमे ओकर की सभ उद्देश्य छलैक ? ओ की बन चाहैत छल ? आ बन, चाहैत की छल, हम ओकरा खूब लगसँ चीन्हैत छिऐक जे ओ केहन प्रतिभाशाली रहय । ओ अपन इच्छाक मनुष्य भैयो जैयत । परंच भ' गेल सचिवालयक किरानी । आब की कही तकरा ? किरानियों होयब ईर्ष्याक विषय भ' सकैत अछि ? ओ तँ मित्र लोक अछि । ओहो ओएह अछि जे हम छी । हमरा दुनू गोटेक बीच कोनो दूरी नहि अछि । हमरालोकनिक कष्टमे कोनो भेद नहि अछि । हम तँ .....बेसी काल ओहू लोकक चिन्ता अपनेसँ जोड़ि क' देखैत छी (चुप भ' जाइत अछि, हेरायल सन क्रममे एक

निराश युवक पाछाँसँ आबिक मंचपर भीतर दिस बढ़' लगैत अछि । ओकरा बजैत देखिक' एक क्षण ठमकि जाइत अछि । फेरो किछु दूरपर दर्शक दिस पीठ क' क' बैसि जाइत अछि, अपन दुनू हाथके पाछाँ टेकबैत पंजापर भार द' क' झुकल ओकर कन्हान झोरो पाछाँ दिस पड़ल देखाइत रहैत छैक । आन लोकसभ क्यो तँ सुगबुगाइत अछि, मुदा बेसी निष्प्राण जकाँ रहैत अछि मंचपर ।)

युवक–जनैत छिऐक, तखन हमरा बड़ विचित्र लगै-ए ।

व्यक्ति क्यो एक–खौंझायल आँहकेँ तँ सभटा विचित्रे लगै-ए ? की विचित्र लगै-ए ?

युवक–(शान्त भावेँ अपन पूर्व संवादकेँ जोड़ैब अछि, खाली एक बेर ओहि टोकारी देनिहार व्यक्तिकेँ देखैत)–लगैत रहै-ए जे एहू बच्चाकेँ हाथमे एकटा सुन्दर खेलौना द' क' फुसिया देल गेलैए । पाठ देल गेलै-ए जे खेलो ग' । आ घर पहुँचैत देरी ओहो खेलौनासँ बहुत रास विषाह कीड़ासभ उड़ि-उड़िक' ओकरा डँस' लगलैक, डंक मार' लगलैक । ओ छटपट करैत एहि कोनसँ ओहि कोन धरि पड़ाइत रहल । सर्वांग बेधाइत रहल । एहि संकट कालमे ओ एकरासँ रक्षाक युक्तियो बिसरि गेल । (कहैत-कहैत जेना साँस तीव्र भ' जाइत) औषध बिसरि जायब रोगक हेतु केहन खतरनाक भ' सकैत छैक ? (क्षण भरि सोचैत) हम ओकरासँ जरैत नहि छिऐक । हम ओहि लोककेँ हृदयसँ स्नेहु करैत छिएक । आखिर ओहो तँ दुनू पयर बान्हल बहादुर अछि ने ! एहन बहुत गोटे छथि । हम हुनकालोकनिसँ ईर्ष्या किएक करबनि ? ओलोकनि तँ हमर प्रिय बन्धु छथि । बन्धुसँ भला क्यो ईर्ष्या क' सकैत अछि ?

(ओ बेचैन जकाँ, परंच धीरे-धीरे पाछाँ दिस घुरि जाइत अछि । पार्कमे किछु लोक छथिहे । जायबलासभ सेहो नहि जाक' जगह टा बदलिक' कोनो-ने-कोनो मुद्रामे बैसल ओ डटल छथि । क्यो कहुना क' तकियापर, कयो पयरपर पयर चढ़ा क' । एहि युवकसँ असंपृक्त जकाँ । युवक चलि रहल अछि संडे । एकदम शिथिल पड़ैत छैक । ओ चिन्तित अछि । ओ एक बेर फेरो चारू दिस एहि दृष्टिसँ देखैत अछि जेना एहि बीच ओकर इच्छाक मोताबिक सभटा वातावरण बनि गेल होइक । ओ बढ़िक' ओत' जाइत अछि जत

एकटा युवक पड़ल अछि । युवक ओत' ओघरायल अछि जे ओकर थकनीकेँ व्यक्त क' रहल छैक । युवक ओकरा लग जाक' कने झुकि क' देखैत छैक । ओहो सभ भरि गर्दनि उठाब चाहैत अछि। परंच से उठबैत नहि छैक । ओकरा नहि देखैत छैक । अपन झोरीपर माथा राखि क' घासक डंटी तोड़' लगैत अछि । युवक निहुँरैत-निहुँरैत उठिक' एक बेर सभकेँ, सुतल-पड़ल मंचपरक लोककेँ, दर्शककेँ देखैत अछि । लग अबैत अछि आ बड़ विनम्र भ' क' निवेदन करैत अछि ।)

युवक–जेना कि ई भाइ साहेब एखन कहलनि जे आठ बाजि गेल अछि, अहाँलोकनि यदि हमरा आज्ञा दी तँ हम एक टा सपना देखि ली ?

दोसर लोक–(घबड़ायल-हड़बड़ायल क्रमे) आब तँ कोनो सन्देहे नहि । जेना सपना नहि भेल, अपना देखब भ' गेल (व्यंग्यसँ) । भलमानुष सपना देखबाक लेल बसातसँ आज्ञा माङि रहल छथि । (हँसैत । ताहि हँसीमे किछु आर गोटेक हँसी मिज्झर भ' जाइत अछि । युवक जाइत-जाइत घुरि क' तीक्ष्ण व्यंग्यसँ देखैत छैक आ जेना चुनौतीक सङ कहैत छैक स्वरकेँ भारी गम्भीर करैत ।)

युवक– हँ, यदि अहाँक आज्ञा हो तँ हम एकटा सपना देखि ली ।

(बेंचपर आबिक' ओ टाङ पसारिक' ओलड़ि जाइत अछि । एक्के क्षण मे कछमछाइत जकाँ बेंचसँ उतरि जाइत अछि जेना उड़ीस काटैत होइक । किछु क्षण जेना किछु सोच' लगैछ–फेर घासपर पसरि जाइत अछि । सभ निफिकिर छैक । ओ हाथकेँ माथक नीचाँ रखैत अछि आ आँखि मुनबाक प्रयास करैत अछि । फेरो पपनी खोलैत अछि आ अलसित होब' लगैत अछि । आकृति किछु तेहन मोलायम जकाँ भ' जाइत छैक जेना कि कोनो प्रिय बसातक सिहकी ओकर आकृतिकेँ छुबिक' चलि गेल होइक । ओ तृप्त भ' रहल हो । परंच, ओकर ई तृप्तिक भाव तुरन्त मिझा जाइत छैक । आ ओकर आकृति फेर पूर्ववत करिछओन होब' लगैत छैक । ओ किछु तेहन-सन भाव प्रकट करैत अछि जेना ओ मने-मन कोनो मार्मिक-सन स्वर सुनि गेल हो । बड़ उद्विग्न भ' उठल हो । एक बेर कान लगबैत अछि । हल्लुक स्वरपर सुनाई पड़ैत छैक नेनाक 'बाबू बाबू जल्दी आउ ने....बाबू औ जल्दी आउ नेऽऽऽ ।' युवक सुनैत अछि ।

तुरन्ते सोर-पोर उठिक' ठाढ़ भ' जाइत अछि आ हाथक झोरीकेँ तेना सम्हार' लगैत अछि जेना ओहिमे वस्तु-जात भरल होइक । ओ भारी होइक ।

यथास्थितिक बोध होइते ओ हताश भ' जाइत अछि । ठकमूड़ी जकाँ लागलमे ओ दुनू हाथमे हाथ दाबिक' भूमिपर भहरि जाइत अछि । ओकरा ऊपरमे नहूँ-नहूँ मेघक छाँह जकाँ अन्हार अबैत-अबैत गाढ़ होब' लगैत छैक । अन्हार गाढ़ होइत चल जाइत छैक लगातार । फेर एकदम अन्हार भ' जाइत छैक घुप्प । पूरा मंच अन्हार ।)

दृश्यांतर

दोसर दृश्य

(ओहि युवकक नाम रमेश छैक । मंचपर धूमिल इजोत छैक । रमेश ठाढ़ अछि । आश्चर्यमय खुशीसँ ओकर आँखि चमचमा उठैत छैक । ओ अपन नजरिक दिशामे दू डेग बढ़िक' फेर रुकि जाइत अछि । एक टा किशोरी उन्नैस-बीस वयसक उदास जकाँ आबिक' ओकरा कातमे ठाढ़ि भ' जाइत छैक करीब-करीब सटिक' । किशोरी जाहि दिससँ आयलि रहैत छैक ताहि ठामसँ पाछाँ-पाछाँ मंचपर गुलाबी प्रकाशक एकटा पातर आवर्त उठैत-बनैत सम्पूर्ण मंचपर पसरि जाइत छैक । दुनू गोटे ठाढ़ अछि ।)

(पार्क ओएह छैक । मात्र बेंच हटाक' कम क' देल गेल छैक । एक दू टा रोमांटिक प्रकारक फूलक गमला देखाइ पड़ि रहल छैक, छोट-छोट फूलक थोकाबला । चारि-पाँच टा गमलाक बीचमे एकटा सुखायल टटायल मौसमी फूल । गाछक ठठरी छैक गमलामे । एक क्षण ओकरा देखैत किशोरी ओकर हाथ पकड़ि लैत छैक । फेर ओतहि बैसा लेत छैक । ओ बैसि तँ जाइत छैक परंच, किशोरी किदस देखबासँ कनछी कटैत अछि बच' चाहैत अछि । किशोरी दिस देखबासँ कनछी कटैत अछि बच' चाहैत अछि । किशोरी ओकरा देखैत छैक । फेर जेना किछु सोचिक' एम्हर-ओम्हर देखैत।)

किशोरी–की बात छैक ? अ आइ मुहाबज्जी बन्दे रहतैक ? (ओ टट्टा करैत छैक । युवक ओकरा दिस देखैत छैक आब बजैत नहि छैक किछु । किशोरी ओकरा मनयबाक लेल मतत्वसँ देखैत छैक । ओ

जेना तैयो नहि मानैक । एक खण चुप्पी । फेर स्थिरेसँ पूछ' लगैत छैक) बेस, अहाँक कविता-तबिता छपल-ए कोनो पत्रिकामे एम्हर ? (किशोरीक प्रश्नपर युवक ओकरा देखैत छैक । बजैत तैयो नहि छैक । तखन किशोरी किचकिचा क' बाज' लगैत छैक) अहाँकेँ किछु पूछियो रहलि छी ? बजैत छी किएक नहि ?

रमेश– किए ? तोरा कोना स'ख भेलौक कविताक आइ ? (उपेक्षासँ)

किशोरी– हमरा नहि । मृदुलाकेँ बतहपनी छैक । चुप्पी बड़ प्रशंसा करैत छलै-ए ।

रमेश– की प्रशंसा ? ओ तँ भरिसक बुझनो ने होयतैक कविताकेँ ।

किशोरी– तँ एहन वस्तु लिखबे किएक करैत छी, जकरा लोक बुझबे नहि करय ?

रमेश– एकर जवाब किछु नहि छैक नीरा ! कमसँ कम हमर लगमे नहि अछि ।

किशोरी– मुदा से जान' हम ककरासँ जायब ? अहाँक महाकवि निरालासँ (ओ चुप्प भ' जाइत अछि । फेर जेना किछु सोचैत-सोचैत मने-मन उदास भ' जाइत अछि । कहैत छैक)

बेस रमेश, ई की बात छैक ? कविता हमरा नीक लगैए, ताहि बातसँ हमरा अहाँ हीन कहैत छी आ जखन ओहि कविताक विषयमे अहाँसँ जान' चाहैत छी तँ अहाँ टारि दैत छी । किएक ? हमरो लग भाषा अछि । एम० ए० मे पढ़ैत छी । कविता भाषेमे होइत छैक ?

रमेश– होइत छैक । मुदा' कविता लेल भाषा पहिल जरूरति नहि थिकैक, नीरा पहिल जरूरति छैक भूख । भूखे अन्न उपजा लैत छैक । मनक अभावे आ अन्हार तकलीफे कविताक जन्म दैत छैक ।

किशोरी–हँ, मन पड़ल । (अकस्मात जेना किछु स्मरण भ' जाइत) मृदुला अहाँकेँ नोत द' क' खोआब' चाहैत अछि । ओ बड्ड चाहैत अछि। अहाँक कवितामे ओकरा ओ किछु बात लगैत छैक । हम–ओकरे भाषामे ओहिना कहाबक प्रयास क' रहलि छी ओहन किछु भेटैत छैक जे विवशताक घनघोर जंगलमे साफ-सुथरा एकपेड़िया देखा दैअय आ दूर-दूर धरि प्रकाश ।

रमेश– नहि जनैत छिऐक, ओकरा की लगैत छैक हमर कवितामे, वा कोनो कविक कवितामे । परंच एतबा बात हमरा बड़ साफ-साफ लगै-ए

नीरा, जे कविता कमसँ कम तत्काल रोटीक समाधान तँ नहि होइत छैक । अब हम अपनाकेँ बड़ उबिआयल अनुभव करैत छी । (रोटी आ उबिआयल बड़ जोर द' कहैत छैक)

किशोरी–अहाँकेँ भूख नहि लागत की ? कत' खयलहुँ अछि आइ ?

रेमश चुपचाप घास खोँटैत अछि आ जीवित गमला दिस संकेत करैत अछि)

रमेश–कविताक स्थान ई थिकैक–गमला । कतेक विचित्र स्थान भ' चुकल छैक एकर । हम किछ ने क' सकैत छिऐक । अपन ई स्थान कविता स्वयं लेलक अछि । लेअओ हमरा की ? हम तँ आब बहुत उबिया गेल छी । हमरा तँ....हमरा तँ आब तोरोसँ भेंट करबामे घबड़ाहटि होइए ।

किशोरी–हमरासँ भेट कर' मे घबड़ाहटि ? रमेश, हम कविता नहि बुझैत छिऐक तेँ कि ? अहाँकेँ प्रेम नहि क' सकैत छी ? हमरासँ घबड़ाहटि होअय अहाँकेँ आखिर से किएक ?

रमेश–कथु ले' नहि नीरा । मात्र इएह लगैए–जे आइ सत्यता छैक, सैह कालिह तोरा आँखिमे विश्वासघात बनि जयतौक । तोँ भरि जन्म हमरा उपराग दैत रहबेँ मनेमन आ दुःखमे, सुखमे जीबैत रहबेँ । ई बात भयावह छैक । हमरा एहन भयावह परिस्थितिसँ घबड़ाहटि होइत अछि नीरा ।

किशोरी–(तटस्थ होयबाक मुद्रामे जेना लाचारी प्रसंग बदलैत कहैत छैक) आइ भौजी अहाँक पसिन्नक वस्तु बनओलनि । बहुत पुछैत छलीह । अहाँ की एतबा दिनसँ इन्टरव्यूए द' रहल छलहुँ । ?

(हाथक बैग खोलैत अछि आ कागजमे लपेटल पकौड़ी बाहर करैत अछि, ओकरा सोझाँमे । फेर बड़ सहज स्वरेँ कह' लगैत अछि ।) भौजी कहि रहलि छलीह' हम अहाँसँ झगड़ा कयने छी ।'

(रमेश कृतज्ञतासँ ओकरा दिस देखैत छैक । फेर जेना ओकर भौजीक स्मरण होइत अन्यमनस्क जकाँ भ' जाइत अछि । बड़ गहीर विवशतासँ कहैत छैक)

रमेश–हमरा लेल आब बहुत मोस्किल अछि नीरा । बहुत मोस्किल ।

रीना–की मोस्किल अछि ?

रमेश–तोहर भौजीक उपकार आ तोहर विश्वास । एहि दुनूक त'रमे हम

अपनाकेँ तेहन जाँतल अनुभव करैत छी जे.....जकरा कहब असम्भव। (एक सेकेण्ड चुप होइत) अपन बेकारी आ भविष्यहीनता पर्यन्त एकरासँ कम्मे लगैए नीरा ! बुझ'मे नहि अबैत अछि, हम एहि दुनु बात सँ एतेक दबाब किए अनुभव करैत छी ? पता नहि चलै-ए।

(उदास आ जेना एक अपरिचित लोककेँ चिन्हबाक' चेष्टा कायल जाय' नीरा ओकरा तहिना देखैत छैक। फेर एक क्षण सोचैत आन दिस देखैत छैक। तखन फेर रमेश दिस देखैत छैक। पकौड़ीबला बड़का कागजक पूड़िया आब खुजि गेल छैक, पूरा। पकोड़ी देखाई पड़ि रहल छैक)

नीरा- अहाँ खाइ किएक नहि छी ?

(ओ पकोड़ी उठाक, मुँहमे दैत अछि आ मुँह लाड़ लगैत अछि। नीराकेँ स्नेहसँ देखैत छैक) आखिर ई दबाव अहाँकेँ माथासँ कोना हँटत' कहिया ? कोन तरहेँ हटत ई दबाब ? हम कविता तँ बुझैत नहि छिऐक रमेश ! (क्षणिक विवशतामे जेना कविताक गप्प हम नहि बुझि पबैत छी।

रमेश-(किंचित तमासाइत बेर-बेर तों हमर कविता नहि बुझबाक बात की कहि दैत छेँ ? की मतलब छौक तोहर ? तोहरा कविता नहि बुझि सकत हमर दोष नहि अछि। (क्षणिक चुप्पी। फेर कने व्यंग्यसँ) आ फेर तोरा जरूरीयो की छौक ? कवितामे तोरा लेल किछु रखलो ने छौक। एम० ए० क' रहल छेँ। कतहु कालेजमे प्रोफेसर बनि लिहेँ। पोथी लिखिक, कोर्समे लगवा लिहेँ। रायल्टी अबैत रहतौक.

नीरा-(निरुद्विग्न भावसँ) अहाँ लेल पानि कत'सँ आओत ? अहाँ तामसमे खयबो नहि करबैक ? भौजीकेँ केहन अधलाह लगतनि ?

रमेश-हम ओहिना गीड़ि लेबैक। पानि नहि चाही।

नीरा-(किचकिचबैत) थोड़ेक कविता खाही आर ?

रमेश-तोँ जनैत छेँ हम अपने बहुत परेशान छी। एना किचकिचयबे आ कोनो कठोर बात कहि देबौ तँ घर जाक' कनबेँ। की लाभ ?

नीरा-लाभ अछि तँ ने अहाँकेँ किचकिचायबाक खतरा उठा रहिल छी। (जेना स्नेही दुष्टतासँ भरिक') असलमे अहाँकेँ किचकिचयबामे बड़ रस अबैत छैक।

(रमेश ओकरा देखैत अछि। फेर अकस्मात सामान्य बनि जाइत अछि। फेर बड़ ममत्वसँ नीराकेँ देखैत अछि आ बिहुँस' लगैत अछि। हाथ उठाक' नीराकेँ थापड़ मारबाक अभिनय करै अछि। ओ स्थिरे रहैत अछि। डेरयबाक कोनो मुद्रा नहि देखबैत छैक। उन्टे खूब गम्भीर आ उदास भ' जाइत अछि। प्रत्युत् ओकर आँखियो छलछला जाइत छैक। एहि बातकेँ प्रकाशक प्रयोगसँ स्पष्ट कयल जाइत छैक। रमेश ओकर तरहत्थी अपना दिस झीपैत छैक आ छाती लगसँ कलम बहारक' ओकर तरहत्थीपर किछु लिख' लगैत अछि। नीरा पढ़बाक यत्न करैत पुछैत अछि)

नीरा-ई की लिखि देलहुँ अछि ?

रमेश-कविता।

(फेर स्नेह आ व्यंग्यसँ विहुँसैत छैक। नीराक ठोढ़ी झुकि जाइत छैक। रमेश ओकर कपारपर हाथ रखैत ओकर मुँह ऊपर उठबैत छैक। तखन नीरा ओकरा प्रगाढ़ भ' देखैत छैक। फेर तत्काले ओकरा कोरामे मूड़ी गाड़िक' कान' लगैत अछि। रमेश किछु काल हतप्रभ रहि जाइत अछि। फेर सामान्य बनल अपन निष्प्राण हाथकेँ माथपरसँ छहलबैत ओकर पीठ धरि ल' जाइत अछि आ अपन अत्यन्त रिक्त आँखिकेँ ओहि दिस ल' जाइत अछि' जाहि दिससँ नीरा आयलि रहैक। एखन ओहि दिस प्रकाश-योजनासँ, अन्हार जकाँ छैक। ओ अपन आँखि घुरा लैत अछि आ नीराक पीठपर रखैत अछि। फेर जेना बड़बड़ाय लगैत अछि।)

रमेश-हम कविताक अतिरिक्त किछु लिखबो तँ ने जनैत छी। कविता हम की लिखब ? कविता हमर भविष्य अछि। तोहर तरहत्थीपर हमर सेह भविष्य ....

नीरा-(बिच्चेमे जेना जोरसँ चिकरैत कहैत छैक) नहि-नहि ! कविता घर नहि थिक। घर नहि होयत कविता। (एक सेकेण्ड चुप रहैत) भदवारि आ जाड़ अयबे करत। कविता छत्ता आ गर्म ऊनी कपड़ा नहि थिक आ ने कविता...ने कविता भनसाघरक रुभदिना ओरिआओन बनैत अछि। रमेश अहाँ....(जेना अत्यन्त असमंजसमे पड़ैत) अहाँकेँ हम किछु कहियो तँ नहि सकैत छी।

(रमेश ओकरा दिस देखैत छैक। उदास हँसी हँसैत अछि। तखन जेना

एक टा साँझ राति दिस घोकचल जा रहल छल, से प्रकाश-योजनासँ प्रदर्शित भ' रहल छैक । चिड़ै-चुनमुनीक घर घुरक कालक ध्वनिप्रभाव कोखन हल्लुक कोखन ऊँच स्तरपर आबि रहल छैक । नीराक पीठपर गड़ल रमेशक मनमे घटित भ' रहल छैक एक कविता । ओकरे पृष्ठभूमिसँ ध्वनि-प्रभाव रूपमे ओहि कविताक पाँती गूँजैत छैक)

बिना चूल्हिपर चढ़ौने त'ब
कयल जायत, रहि सकैत अछि प्रेम
बिना चूल्हिपर चढ़ौने त'ब
कहिया धरि कोनाक' चलाओल जा सकैत अछि
घर आ द्वारि ई संसार
मित्र घुरि जाउ घर
साँझ पड़ि गेल ।
घुरि जाउ घर मित्र
साँझ पड़ि गेल ।

(रमेशक हाथ नीराक पीठपर जेना खूब जोरसँ पड़ि गेल छैक । भरिसक नीरा चहुँकि जकाँ उठैत अछि । मंचपर सर्वत्र चुप्प अन्हरओन अवसादक वातावरण छैक । रमेशक आकृतिपर जे पातर प्रकाश पड़ि रहल छैक ताहिसँ बुझाइत छैक जेना ओकर मनमे घटित भ' रहल ई कविता–ओकर मनक ई बात–सुनि लेल गेल छैक । ओ तत्काल जेना व्यस्त भ' जाइत अछि । नीरा ताही बीच झटकिक' अपन मूड़ी उठबैत अछि । ओकरा दिस देखैत छैक । नीराक आँखि लाल पानिमे दहाइत काचक गोली जकाँ देखाइत छैक । आकृति मोचड़ाइल टटका फूल-सन)

नीरा–अहाँ की कहैत छलहुँ ? की कहैत छलहुँ हमरा ?

रमेश–आब साँझ भ' गेलैक नीरा ! घर जो । लोक चिन्ता करैत होयतौ ।

(रमेश अपना भरि स्थिर होयबाक प्रयास करैत कहि जाइत छैक ।)

नीरा–बूझल अछि हमरा । अहाँ हमरासँ उबिया जाइत छी । हमर उपस्थितिसँ उबियाइत छी अहाँ । (किछु मानसिक द्वन्द्वमे पड़ैत जकाँ एक बेर देखैत पूछ' लगैत छैक) मुदा अहाँक ओ मानस पुत्री स्मृति ? तकर की होयतैक ? ओ वर्ष-वर्ष पैघ होइत जायति । समर्थि भ' जायति । हम

एकसरे ओकर बिआहक इन्तिजाम क' सकबैक ? दोसराक घरसँ अहाँक बेटीक संभव होयत विवाह ?

रमेश–(करीब-करीब उत्तेजनासँ ओकर बातकेँ कटैत) बेकारक भावुकता थिकैक ई सभ । जकरा घर नहि, खायक नहि.... (असहाय जकाँ होइत) तकर बच्चाकेँ बालरोग भ' जाइत छैक । (एक सेकेण्ड चुप रहि) स्मृतियो समयक संगे बालरोगक शिकार भ' जायत ।

(नीराक आकृति करुणासँ तनतना जाइत छैक । तकरा परबोधैत रमेश कहैत छैक) हम जुबान दै छिऔक, ओ तोहर सुखमे कहियो बाधक नै बनतौ । ओ तँ जहिना मनमे जनमलैक तहिना मोनेँ मे मरि जयतैक । ओकरा दूध तँ क्यो पिऔतैक नहि ओकरा क्यो औषधो आनि क' नहि देतैक ।

(नीरा खूब शान्त, मुदा बहुत तीख आँखिसँ रमेशकेँ देखैत छैक । रमेशो ओकरा देखि रहल छैक एखन)

नीरा– कविता बहुत निर्मम होइ-ए । माथ फोड़बाक पाथर आ कि फेरो डुबि जयबाक लेल एकटा कोशी-कमला, किछु ! नहि ?

रमेश–किएक पूछैत छेँ ?

नीरा–एहिना । जे वस्तु छूट' लगैत छैक तकरा खूब नीक जकाँ जानि बूझि लेबाक मोह होइत छै । (किछु सेकेण्ड चुप्पी) स्त्रीगणक विषयमे लोक कहैत छैक, बड़ मायाविनी होइ-ए । बन्हन पसिन्न करै-ए । जीवनसँ प्रेम करै-ए । जीवनपर प्राण दै-ए । घिघरी काटि-काटि क' मरैत रहत, तैयो पता नहि किएक, गृहस्थीकेँ किऐक एतेक प्रेम करै-ए ?

रमेश–हँ गृहस्थीसँ, जँ हो तखन । हवा आ पानिसँ तँ नहि ।

(दुनू एक दोसराकेँ देखैत अछि । फेर आँगा दिस । फेर पकौड़ी दिस। फेर नीरा शिकाइतसँ रमेश दिस ।)

रमेश–

तखन ? (दुनू एकके बेर बजैत छैक ।)

नीरा–

रमेश–बाज ।

नीरा–की बाजब ? अहीँ बाजू ! अहाँक अनुभवसँ हम कतेक अबोध छी ।

रमेश–गलत बात नहि बूझी नीरा ! (क्षण भरि बिलमैत कह' लगैत छैक)

मानि ले, हमरा-तोरा मनक मोताबिक जीवन भैओ जाइत अछि, तैओ की होयतैक ? एहि परिस्थितिक अन्त छैक कतहु ?

नीरा–फेर वैह कविताक भाषा....(जेना असह्य होइत अकस्मात)

रमेश–(संयत स्वरमे, गंभीरतापूर्वक नीराक सम्वादकें कटैत कहैत छैक)

'आब घर जो नीरा !'

(नीरा ओकरा विवशतासँ देखैत छैक । एक क्षण गुनि-धुनिमे पड़लि रहैत अछि ! परंच, रमेशक आँखिमे ओकरा किछु तेहन रुक्षता एवं तटस्थता देखाइत छैक जे ओ ठाढ़ि भ' जाइत अछि । एक बेर रमेश दिस पुनः एहि अपेक्षासँ देखैत अछि जे भरिसक ओकर कठोरता समाप्त भ' गेल होइक । से नहि भेल छैक ! ओ नाचार भावसँ डेग उठब' लगैत अछि । रमेश सङे-सङे चलैत छैक । दुनू चुप अछि । दुनू एक खास दूरीपर चलि रहल अछि । चलैत-चलैत दुनू ताहि अंदाजमे चल लगैत अछि ओकरा दुनूक बीचक दूरी एक्के दिशामे बढ़ैत चल' जाइत छैक । विंग लग पहुँचिक' रमेश कने ठमकि जाइत अछि । नीरो किछ ठमकि क' घुमि जाइत अछि । आकृति ओहिना मिझायल छैक)

नीरा–घर आयब ?

रमेश–अब नहि....(रमेश एकदम निर्णायक गंभीरतासँ कहि जाइत छैक । नीरा हतप्रभ रहि जाइत अछि ओकर एहन निसोख उत्तरसँ । तथापि ठमकि क' जेना बहुत प्रयास करैत कहैत छैक)

नीरा–भौजी कहने रहथि कह' ले'....।

(ओ आगाँ बढ़ि जाइत अछि । एहि बेर ओ अपेक्षकृत बेसी झटकि क' बढ़ि जाइत अछि । रमेश रुकैत-बढ़ैत घुरिक' आबि, पराजित जकाँ बीच मंचपर चिन्तित ठाढ़ भ' जाइत अछि । मात्र अपन आकृतिसँ ऊपर दिस आगाँ बहुत दूर धरि देख' चाहैत अछि । बेचैन भ' जाइत अछि जेना ओकर बेचैनीसँ बुझाइत छैक ओना, जे घड़ी ने अपन देहकें नोचिक' फेकि देत । ओकर हाव-भाव बिगड़ल छैक । उद्विग्न भ' ओ टहल' लगैत अछि । ओकर हाथमे किछु छैक नहि लटकल, परंच ओकर मुद्रा एकन छैक । जेना ओकर हाथमे कोनो झोरी लटकल होइक । मुदा से ओ स्मरण नहि क' पाबि रहल अछि । बामा हाथ ओहिना रखन, दहिना हाथसँ जेबी हथोड़ैत अछि कुर्ताक, पैजामाक ।

फेर हताश भ, क' एत ओत चल' लगैत छथि । तखने पाछाँसँ एकटा युवक अबैत छैक । बयस बीस-बाइस वर्ष ! उदास छैक ओ । ओएह युवक पहिल दृश्यकें पाछाँसँ आबिक' मंचपर दर्शक दिस पीठ क' क' बैसि गेल रहैक । ओहिना चिन्तित अछि ।)

(युवक रमेशकें नमस्कार करैत छैक । ओ आश्चर्यसँ ओकरा देखैत छैक । ओकर आँखिमे 'ई के थिक' से जिज्ञासक भाव लक्षित भ' रहल छैक)

युवक–अहाँ हमरा चिन्हलहुँ ? हम अमर छी भैया ?

रमेश–अमर की समर ?

युवक–अमर ।

रमेश–बेस-बेस, कहिया अयलह दिल्लीसँ ?

युवक–दिल्लीसँ ? (विस्मयपूर्वक) हम तँ गामसँ आयल छी ? अहूँ तँ गामसँ आयल होयब ने ?

रमेश–हँ गामसँ । (जेना त्रुटि सम्हारैत) एहिना । ठीके तोरे जकाँ बगलमे झोरी लटकओने कालेजक डिग्री स्कूल-कालेजक सुन्दर-सुन्दर साहित्यक सांस्कृतिक, खेल-कूद आ समाज-कार्यक दर्जन प्रमाण-पत्र...(फेर कनेक बिलमैत) आ आचरण-सम्बन्धी प्रमाण-पत्र...(चुप) तोरो सङमे होयतह ने ?

(रमेशक एहि प्रश्नपर युवक हर्षित भ' जाइत अछि । बड़ अभिमानसँ अपन लटकल झोरी दिस देखै-ए । ओ अपन योग्यतापर संतुष्ट भ' जाइत छैक । ओ अन्ततः उदास भ' जाइत अछि । ओकर मुँहपर धूमिल प्रकाश पड़ि रहल छैक । ओ दर्शककें देखि रहल अछि । मामुली आंगिक किछु चेष्टाक बाद स्वगत जकाँ) ।

(युवक रमेशकें नमस्कार करैत लैक । ओ आश्चर्यसँ ओकर देखैत छैक । ओकर आँखिमे 'ई के थिक' से जिज्ञासक भाव लक्षित भ' रहल छैक)

युवक–अहाँ हमरा चिन्हलहुँ ? हम अमर छी भैया ?

रमेश–अमर की समर ?

युवक–अमर ।

रमेश–बेस-बेस, कहिया अयलह दिल्लीसँ ?

युवक–दिल्लीसँ ? (विस्तयपूर्वक) हम तँ गामसँ आयल छी ? अहूँ तँ गामसँ आयल हायब ने ?

रमेश–हँ गामसँ । (जेना त्रुटि सम्हारैत) एहिना । ठीके तोरे जकाँ बगलमे झोरी लटकओने डिग्री स्कूल-कालेजक सुन्दर-सुन्दर साहित्यिक सांस्कृतिक, खेल-कूद आ समाज-कार्यक दर्जन प्रमाण-पत्र.... (फेर कनेक विलमैत) आ आचरण-सम्बन्धी प्रमाण-पत्र...(चुप) तोरो सङमे होयतह ने ?

(रमेशक एहि प्रश्नपर युवक हर्षित भ' जाइत अछि । बड़ अभिमानसँ अपन लटकल झोरी दिस देखै-ए । ओ अपन योग्यतापर सतुष्ट भ' जाइत अछि परंच रमेशक आँखि एक टा भयावह रिक्ततासँ भरि जाइत छैक । ओ अन्ततः उदास भ' जाइत अछि । ओकर मुँहपर धूमिल प्रकाश पड़ि रहल छैक । ओ दर्शककेँ देखि रहल अछि । मामूली आगिक किछु चेष्टाक बाद स्वगत जकाँ)

रमेश–ओएह क्रम अछि (अकस्मात मानसिक उत्तेजनासँ भरिक') ई क्रम कतेक भयानक आ षडयन्त्रसँ भरल अछि ! सीसे पसरल अछि । सालक साल पता नहि लगैत छैक जे ई सुन्दरताइसँ छापल, मोहरसँ दागल कागतक चेथड़ासभ केहन विषाह अछि ! एक सम्पूर्ण पीढ़ीक आत्मविश्वासमे उतरि जाइत छैक । आस्ते-आस्ते मूस बनिक' चिबा जाइत छैक । आओर एकटा सम्पूर्ण पीढ़ी अपन बेकारी, दिशाहीनता आ अन्हार भविष्यक स्वप्नकेँ लाल-लाल लोहसँ मनेमन चिचियाइत रहि जाइए। लगमे पड़ोसक कोनो तिनमहलाक छतपर कोनो शुभ आयोजन होइत रहैत अछि । ई सिलसिला कतेक भयावह अछि !

(ओ जेना एकाएक मोन पड़ि गेलापर देखैत अमरकेँ । एहि बीच लगातार अमर ओकरा विस्मय-विचित्रतासँ देखैत रहैत छैक । रमेश उदास बिहुँसैत छैक आ बड़ स्नेहसँ पूछैत छैक ।)

रमेश–आब' काल माय की कहलकह ?

अमर–कहलक, तोहूँ नोकरीक आराममे पड़िक' सुरेशे जकाँ बुढ़िया मायकेँ बिसरि ने जैहँ । हम तँ मरियो ने सकै...

रमेश–(बिच्चेमे) हँ, ठीके । मुदा जनैत छह, हम नौकरी ले' आयल तँ रही

अवश्ये, मुदा आइ धरि कि नोकरी भेटल हमरा ? माय हमरापर व्यर्थे तमसायलि अछि । (क्षणिक चुप्पीक बाद आत्मस्वीकारक ध्वनिमे) हम ओकरा एको दिनक लेल नहि बिसरलिऐ अमर ! साक्षी अछि हमर आत्मा ! हम ओहि बुढ़ियाकेँ एको दिन बिना मोन पाड़ने नहि बिता पओलहुँ । खाहे पार्कक बेंचपर कि कोनो दोस्तक घर.....

अमर–(किछु असमंजसमे पड़ैत जकाँ) मुदा भैया, माय तँ हमरा बड़का भैयाक विषयमे कहलक–सुरेश भैयाक विषयमे, अहाँ किएक दुःखी भ' गेलहुँ ?

रमेश–(जेना ध्यानमे अबैत, चेतना प्राप्त करैत) अरे....हँ ! मन पड़ल । माय तँ हमर...। मुदा अमर...(फेर अनुपस्थिति जकाँ) बेस, तँ तोँ काल्हि माँकेँ लिखि दहक जे नोकरी नहि भेटल अछि । भेटिते मातर लिखि देबौक । एखन कोनो तरहेँ ट्यूशन-त्यूशन क' क' गुजर करब । चिन्ता नहि करिहेँ । हम बुढ़िया माय नहि बिसरि सकैत छी । बिसरियो नहि सकब । मुदा....काल्हि लिखि दहक अवश्ये (रमेश लग भ' क' ओकर कन्हा थपथपबैत छैक जेहन स्नेह-भावसँ एकटा बड़का भाइ क' सकैत छैक । अमर ओकरा कृतज्ञताक भावसँ देखैत छैक । ओकर आकृति झुकि जाइत छैक)

रमेश–बेस. तोँ किछु खयलह ?

अमर–(चुप रहैत छैक, मूड़ी लटकओने)

रमेश–अयँ, किच्छो नै खयलह ? एखन धरि भुखले छह ? विचित्र बात । तोँ हमरा पहिने किएक ने कहलह ? झंझटमे द' दैत छह तोँ । आब एखन की व्योंत करू हम ? एतबा कालकहि देने रहितहतँ तखन धरि.....(किछु सोचैत) एना कर' जे (बगुली हथोड़ैत) हमर जेबीमे किछु पाइ अछि । जा आ ओहि दिस (विंगक दोसर दिस इंगित करैत छैक), फूट-पाथपर किछु-किछु बिकाइत रहैत छैक खायक वस्तु । (फेर जेना एकाएक प्रसन्न होइत) आरे, एत' शहरमे सेहो बुढ़िया माय फूटपाथपर रोटी पकाक' राखैए अपना सभ ले' । कये देखहक जाक' ! फूर्तीसँ जाह । (अमर किछ हिचकिचाइत छैक जयबामे ! मुदा, ओकर कहबाक ढंगसँ प्रभावित भ' क' तेना चल जाइत अछि विंगसँ बाहर, जेना ओकरा अदृश्य हाथेँ धकेलल जा रहल होइक । जाइत काल रमेश ओकर कान्हपरक झोरी उतारि लैत छैक । कहैत

छैक)

रमेश–खाइयो काल झोरी लदने रहबेँ की ? तोँ की गदहा-घोड़ा छेँ जे बोझ लदने चरबेँ आ पानी पीबेँ ? एकरा एत' राखह आ घुरिअ' आबह तुरन्त । हमरा मित्र बड़ जल्दी आबि जाइत अछि आ तोरासँ गामक हालचाल बुझबाक अछि । जो आओर आ ।

(अमर भने संदिग्ध मने, मुदा चल जाइत छैक । रमेश ओकर झोरीमेसँ कागज-पत्र बहार करैत छैक । उनटि-पुनटि क' देख' लगैत छैक । डिग्री छैक । आरो प्रमाणपत्र तरहक किछु-किछु । 'महाकवि विद्यापति परिषद, मधुबनी कालेजक प्रमाण-पत्र बेस मोट-मोट अक्षरमे जगजियार छैक । ओही कागज-पत्रसभमेसँ एकटा छोट-छिन मलिछोँह कपड़ाक पोटरी बहराइत छैक । ओकरा हाथमे उठबिते जेना कोनो मोहक गंध ओकर नामके पैसि जाइत छैक । से बात रमेशक आकृतिपर उतरल भावसँ बुझाइत छैक । प्रकाश-संयोजनसँ ई देखाओल जाइत छैक जे रमेशक आँख चमचमा जाइत छैक । मुदा, तत्काल लुप्तो भ' जाइत छैक । कागज-पत्रसभ पसरल छैक । पोटरीकेँ उठाक' ओ एक बेर आँखिक सोझाँ रखै-ए ऊपर दिस । फेर ओकरेपर व्यंग्य आ क्रूरतासँ बिहुँसैत अछि । अस्पष्ट सन हुंकारी भरैत अछि । फेर बिना कागज-पत्रकेँ समेटने एक दिस पड़ि जाइत अछि । चितङ । आँखिपर बाँहि राखि लैत अछि ओ । अपन एहि मुद्रामे अत्यन्त चिन्तित आ दु:खी बुझाइ पड़ैत अछि ।

ओम्हरसँ अमर अबैत छैक । निहुँरल जकाँ । निरास । रमेशकेँ एना भ' क' पड़ल देखि ओ ठाढ़ भ' तेना देख' लगैत छैक जेना ठकमूड़ी लागि जाइत छैक ओकरा । फेरा नहुँएँ-नहुँएँ लगने बैसि जाइत छैक आ ओरियाक' कागज समट' लगैत अछि जाहिसँ बाधा नहि पहुँचैक रमेशकेँ ओ यथासाध्य ठीकसँ सभटा कागज-पत्रकेँ झोरीमे राखि लैत अछि । एक टा कागजपर रमेशक टाङ पड़ल छैक, एकटापर पीठ । अमर ओकरो बाहर कर' चाहैत अछि । ओकर एहि प्रयासमे ओ आँखिपरसँ हाथ उठाक' देखैत छैक)

रमेश–आबि गेलेँ ? (पुछैत रमेश उठिक' बैसि जाइत छैक । महत्त्वपूर्ण व्यंग्यसँ कहैत छैक) जहाँ धरि हम बुझैत छी, अपनेकेँ भोजन नहि भेटल होयत अमर बहादुरजी ! बुढ़िया रोज शिकाइत करैत रहैत छैक

जे सभ उधारी खा-खा लैत अछि आ पाइ देबे ने करै-ए । हम की करियौक ? जतबा पाइक जोगाड़ लगै-ए ततबे रोटी बनबैत छी । बस । चुप्पी । फेर बजैत छैक ।) आइयो कम पाकल होयतैक रोटी । बिका गेल होयतैक । (फेर जेना अमरकेँ देखलापर चौंकैत अछि । कहैत छैक) आहि रे बा, तँ उदास किएे भ' गेलेँ भैयारी ? ई-ई पोटरी.... .(ओ पोटरी तकैत अछि जे एक कात पड़ल छैक) ई पोटरी तँ माताराम बेरे-विपत्ति ले' ने सङ क' देलकी-ए ! आबि जो दुनू भाइ एहि चूड़केँ भुजिली । काल्हि भोरे देखल जयतै । अबहि-अबहि, जल्दी आ । चूड़ा बड़ जल्दी सेरा जाइत छैक । अयँ ? (अमर ओकर बातसँ घिचाइत ओकरा आर लग भ' जाइत छैक । रमेश पोटरीक गीरह खोलैत अछि आ अमरक हाथ पकड़िक' चूड़ापर धरैत अछि आ-'शुरू करह' कहैत अछि । अमर ओकरा ओहिना देखैत छैक । फेर चूड़ा उठाक' एक मुट्ठी फाँकि लैत अछि । रमेशो एक फक्का लैत अछि । फँकिते-फँकिते, चूड़ा चिबबैत संवाद बजैत छैक)

रमेश–रंग आबि जयतौक यदि हरियर मिरचाई आ नोन सेहो रहितौ एकरा सङ । अपूर्व स्वाद होइ छै, स्वर्गीय । (फेर अकस्मात् चुप भ' जाइत अछि, जेना किछु सोचमे पड़ि जाइत अछि) मुदा भाइ, आश्चर्य ।

अमर–की ?

रमेश–एहिबेर माँ हरियर मेरचाइ किएे नहि पठऔलक ? बुझाइ-ए, बुढ़िया आरो बिसराहि भ' गेलि-ए ।

(अमर आश्चर्यें ओकरा देखैत अछि आ चूड़ा चिबबैत रहैत अछि । ओकर माथ निहुँरि जाइत छैक । रमेश गंभीर होइत फँकिते-फँकिते जेना कोनो बातक स्मृतिमे पड़िते उठि जाइत अछि । कहैत छैक)

रमेश–बस अमर, तोँ एक मिनट ठहर । हम तुरन्ते अबैत छी ।

(ओ ओम्हर जाइत अछि जाहि ठाम पहिने बैसल रहय । आबि क' ठाढ़ भ' जाइत अछि । पुड़ियावाला कागज पड़ल छैक । पकौड़ी टा आब नहि छैक । ओ फेर निराश भ' क' दोसर दिस देखैत छैक । ओहि दिस संभवत: एकटा भिखमंगाक बच्चा पकौड़ी खा रहल छैक । दुनू हाथमे पकौड़ी धयने ओ ओकरा भयभीत आँखियेँ देखैत ठाढ़ छैक । संगे कनछियाक' एम्हर-ओम्हर कतहु पड़यबाक बाट सेहो

ताकि रहल अछि । से नहि देखिक' चुप-चाप गबर-गबर खयनो जाइत अछि-आ डेरायल-डेरायल रमेश दिस तकितो रहैत अछि । रमेश ओकरा पर सोझे-सोझे आँखि रखैत छै कि लग जाय लगैत छैक कि छौंड़ा भयसँ चिचिया-जकाँ उठैत छैक । रमेश स्तंभित भ' क' ठाढ़े रहि जाइत अछि । तखन आकृतिपर हँसी आ स्नेह आनिक' छौंड़ाकेँ आश्वासन देब' लगैत छैक ।)

रमेश--अरे बेटा, किऐ डरा गेलें ? तोरा हम थापड़सँ नहि मारितियौक । एकदम नै । ने तोहर हाथसँ छिनबे करितियौक ई । एकदम नै । खो आ आबहि हमरा लग ।

(एहि बीच ओकर बामा बाँहि तेना भ' जाइत छैक जेना ओहिमे झोरी टाङल होइक । आ ताहिमे वस्तु-जात भरल होइक । से हाथमे भारी बुझाइत होइक ओकरा । हाथकेँ ओहि मुद्रामे रखने ओत' सँ घूर' लगैत अछि । फेर घुरिक' आबि अमर लगमे ठाढ़ भ' जाइत अछि । ओकरा चुपचाप देखैत अछि । छौंड़ो ससरि गेल छैक)

रमेश–आहि रे बा, तों चुप-चाप किए बैसल छैं ? खाइ किए-ने छैं ? हमरा हेतु रुकबाक कोनो जरूरति नै रहौक । हमरा भूखो कम्मे लगै-ए । ओ तँ कह जे गामक चूड़ा रहय, माँ पठऔने छलि, रहल नहि गेल । रहले ने जाइ-ए । कवितासँ ल' क' अन्न धरिमे हमरा बुतेँ रहले ने जाइ-ए।

अमर--अहाँ एखन कत' रही भैया ?

रमेश–ओएह, पकौड़ी देख' । तारी लेने आयलि छलि ने अपन हथबेगमे भरि क' हमरा ले' ! (पछताइत जेना क्षण भरि चुप भ' जाइत अछि ।) हमहूँ बड़ अपात्र बेवकूफ छी भाइ ! तामसमे छोड़ि देलिऐ । एहि बातसँ ओ दुःखी सेहो भ' गेलि । चल्लो गेलि । आ आब एखन गेल रही तोरा ले' ताक' । मुदा, तावत एकटा भुखल छौंड़ा ओकरा खा रहल छल । (ओ फेर निश्चिन्त भ' जाइत अछि । सोचिते-सोचिते जेना बाज' लगैत अछि) जानि नहि, हमरा देखिक' ओ बच्चा डरे चीत्कार किए क' उठल ! (क्षण भरि चुप रहिक) बेस, हमरा तों सत-सत कह तँ हम कि एकदम जानवर जकाँ लगैत छी ? भयावह जनमारा जन्तु जकाँ लगैत छी हम ? हमरासँ ओ डेरायल किएक ?

अमर–नै भैया ! अहाँ बेकारे चिन्तित छी । बच्चा तँ कोनो अनचिन्हारसँ डेरा

जाइत छैक । अहाँ तँ सुन्नर छी । सभकेँ अपन सम्बन्धी लगबा जोग । (रमेश जेना थाकल-ठेहिआयल जकाँ बैसि जाइत अछि । अमरकेँ देखैत कहैत छैक)

रमेश–नीरा चल गेलि । एखने तँ गेलि अछि । प्रत्युत् तों तँ देखनो होयबहक । नै ?

अमर–नहि, हम नहि हुनका देखलियनि । किएक घुरि गेलीह ओ ? ओ अहाँकेँ स्नेह करैत छथि ने !

रमेश–ओ कविता नहि बुझैत छैक । विशुद्ध संसारी व्यवहार बुझैत अछि ओ । तें चल गेलि । बेस, जाय दही । (एक क्षण चुप्पी) जे कवितासँ नहि रुकि सकय तकरा हेतु सभ प्रबन्ध व्यर्थ छैक । यद्यपि हम ओकर बड़ कृतज्ञ छिऐक, किएक तँ ओ हमरा तथापि प्रेम करैत अछि । (अमरक आकृति विचित्र असमंजसमे बुझाइत छैक, स्वीकार-अस्वीकारक भावसँ भरल लगैत छैक । ओ गुम-सुम अछि । तखन एकाएक जेना रमेशक शरीरपर सभ किछु क्यो झाड़ि-झुड़ि दैत छैक, ओ खूब प्रफुल्लित स्वरमे बाज' लगैत अछि ।)

रमेश–बेस भाइ सुन । जाय दहीक । ई जीवन अछि ने, एकटा महान कविता जकाँ अछि । संसारक सम्पूर्ण व्यापार, कार्य-कलाप, सम्बन्ध-विच्छेद, एकरोमे उठैत छैक बुलबुल्ला । की ? (किछु ठहरैत जकाँ) मुदा तों ही कह, पकौड़ी नहि खायब तँ कोनो अपमान नहि भेलैक । मानि से, यदि भौजी से मानि लेअय तँ ओ हमरा गलत बुझति । (फेर आंशिक चुप्पी) बड़ झंझटि छैक । एत' क्यो ककरो बुझबे नहि करैत छैक । सभ अप्पन आँखिक रंग फिट क' दैत छैक एक दोसरपर । क्यो एहि बातकेँ मान' ले' तैयार ने अछि जे हमरालोकनिक तकलीफक जड़ि एक्के थिक । जाय दही ।

अमर–अहाँ हमरा सङे कने आर चूड़ा खाउ भैया ! (आग्रहपर रमेश बैसि जाइत छैक)

रमेश–ले' फँकैत छी । पेट खराब होयत तखन ? (रमेशक कहबाक ढंगपर अमर किंचित हँसैत अछि । एक क्षण बाद कहैत अछि) बेस अमर, हम बिनु पुछने तोहर झोरीक वस्तु बहार क' देखि-दाखि लेलियौक, ई खराब बात थिक ने ? गाँधीजी कहने छथिन जे बिनु पुछने ककरो वस्तु नहि छुबाक चाही....

अमर–(एकाएक बड़ उत्तेजित होइत कहि जाइत अछि) गाँधीजी बहुत किछु कहने छथिन । 'ककरो दुःख नहि देबाक चाही, हिंसा नहि, सभकेँ प्रेम करबाक चाही, छातीसँ लगयबाक चाही....'

(रमेश एहि घटनापर अमरकेँ अप्रत्याशित आश्चर्य तथा हर्षसँ देखैत छैक । रमेशक मुँह चलायब क्रम-क्रमसँ बन्द भ' जाइत छैक)

अमर–मुदा भैया, सभसँ बड़का बात छैक माननाइ । ओहो विचारकेँ छोड़िक' अपन चरित्रमे बना लेब । छुच्छे कहि देब नहि । (ओकर आकृति फेर किछु विकृत भ' जाइत छैक । ओ कहैत छैक) हम घृणा करैत छी। अपितु एहि बातपर जतेक घृणा करबाक चाही ततेक घृणा नहि क' पबबाक कारणे अपनापर क्रोध होइत अछि । (अमरक पूरा आकृति तनतना जाइत छैक । किंचित अंतराल । फेर जेना आत्मविस्मृत होइत)

"नै स्वीकार शब्द सभक उपदेश,
भरि मुट्ठी माटि आ सूड़ा खायल बीयाक
रोगाह फसिलपर अकड़ल नक्शा
आ निश्चिन्त देश ।
नहि स्वीकार अछि ई सभ किछु
आनक द्वारा होइत अन्याय
सहल नहि होइए विकायल परिवेश
कहाँ कतहु बाँचल अछ मुट्ठी भरि देश ?

रमेश–(जेना आत्मविश्वास पबैत) आब सभटा बदलि जयतैक भाइ ! मन जखन बदलि जाइत छैक, अज्ञानीसँ ज्ञानी भ' जाइत छैक, नेनासँ चेतन भ' जाइत छैक, तँ किछु टा नहि रुकैत छैक ।

(ओहि ठाम पड़बाक यत्न करैत अछि, तखने जेना ओकरा अपन मोड़ल हाथक बोध होइत छैक जे लगातार एकटा भरल झोराक भार टङने जकाँ बुझाइत रहैत छैक–तखन अपन हाथक ओहि बोझसँ ओ व्याकुल जकाँ होब' लगैत अछि एकटा विचित्र आँखिए ओ लक्ष्यहीन भावसँ देखैत छैक दू सेकेण्ड, फेर अमरकेँ देख' लगैत छैक । तखने जेना कोनो क्रूर यथार्थकेँ अकस्मात् देखि लेअय तहिना बेचैन, आ असहाय हारल जकाँ नीचाँ दिस ताक' लगैत अछि । फेर जेना बड़बड़ाय लगैत अछि ।]

रमेश–की पाप छैक अमर ? हमर हाथमे एकटा भारी झोरी लटकल अछि । चौबीसो घंटा लटकल रहैए ई झोरी । एकरा हम घर पहुँची तखने ने राखी उतारि क' ! मुदा, हम घर पहुँचिये ने पबैत छी । आ, सभ हमर आसाबाटी तकैत होयत । खासक' तोहर भौजी । कनेको देरी भ' गेल हमरा पहुँच'मे कि तोहर भौजी तेना व्याकुल भ' जाइत छथुन जेना बाटमे क्यो हमरा छूरा भोंकिक खून क' देने हो । चिन्तासँ बताहि भ' जाइत छथुन । बुझैएमे नहि अबै ए...

अमर–ई सभ अहाँ की कहि रहल छी ? भैया ? हमरा तँ....चिन्ता भ' रहल-ए । अहाँ ठीक-ठीक तँ बाजि रहल छी ने !

[जेना फेरसँ रमेशकेँ ओकर हाथकेँ गहीर आँखिए देखैत कहैत छैक] कहाँ अछि अहाँक हाथमे झोरा ? कहाँ अछि ?

रमेश–तोँ देखिये नहि पाबि रहल छह । नहि देखि पाबह सैह नीक ! बड़ कठिन होइत छैक एकरा उतारिक' राखि पायब । कवितासँ कठिन छैक ई....। मुदा हम मानि गेलियौक अमर....तोँ की कहि रहल छलेहेँ एखन ? मुट्ठी भरि देश...? बहुत बढ़ियाँ भाइ ! अलबत्त जीवित बात। (एक क्षण चुप । चिन्तित जकाँ) (कने सोचैत जकाँ) हमरा तँ आब कखनो-कखनो चिन्ता होइ-ए अमर, जे एना तँ लोक हमरा बताह बूझ' लागत । आ फेर समाजक चक्र तँ जनिते छेँ–एक बेर जहाँ कि क्यो बताह घोषित कयल गेल–खाहे कोनो षडयन्त्रक कारण बताह घोषित कयल गेल कि ओ भरि जन्म एहि अभियोगसँ मुक्ति नहि पाबि सकैत अछि । आ हम चाहैत छी मुक्ति । (एकटा साँस लैत) कवितासँ ल' क' एहि प्राण धरिक मुक्ति ।

[ओ एक हाथसँ अपन माथ पकड़ैत अछि । बामा हाथ टङयले जकाँ छैक । ओकरा मुँहपर प्रकाश तीव्र भ' क' ओकर रेखासभकेँ ततेक स्पष्ट क' दैत छैक जे ओकर अन्तर्द्वन्द्व खूब मार्मिक भ' क' खूब देखार भ' जाइत छैक । फेरो नहूँ-नहूँ अंधकार पसरि जाइत छैक दुनू आकृति पर । अमरक मुँहपरसँ प्रकाश किछु तेहन ढंगसँ हटैत छैक जे अन्तमे ओकर दुनू आँखिमे जे विस्मयक प्रसार छैक से दर्शक देखि जाइत छैक । आँखि आवश्यकतासँ बेसी पसरल बुझाइत छैक । फेर अन्हार ।]

तेसर दृश्य

गहन अन्धकार शनै-शनै: एक कोनसँ फाट' लगैत छैक, पातर भेल जाइत छैक । अन्हारक त'रसँ उषाकालीन ललाओन प्रकाश पसर' लगैत छैक । भोरस उपेक्षित ध्वनि-प्रभावक पृष्ठभूमिमे ओहि पहिल दृश्यक बेंचपर पड़ल नायक चिहुँकि क' जगैत अछि । फुरफुराक' ठठि जाइत अछि । तत्काल अपना विषयमे ओकरा किछु बुझ'मे नहि आबि रहल छैक । एक क्षण सोचैत अछि । चीन्ह' चाहैत अछि पूरा परिस्थितिकेँ, पपनी हिलबैत-देखैत अछि चारू कात ! कतहु क्यो नहि बुझाइत छैक । भोरका ललाओन एखनो ओकरे लग-पासमे पसरल छैक । मंचक अधिकांश भाग अन्हार आ चुपचाप छैक ।

पूरा दृश्य पहिल दृश्यवला छैक, यथावत् । ओ चिन्तित भावसँ एक दिस बढ़' लगैत अछि । प्रकाश आब बढ़ैत जा रहल छैक । एक युवक अपन ओहि मुद्रामे पीठ एम्हर कयने पड़ल अछि जे प्रकाशसँ आब दृश्य भ' रहल छैक । रमेश ओकरा देखैत छैक । रमेश जाक' ओकरा लगमे ठाढ़ होइत छै । झुकिक' देखैत छैक ओकरा । युवक अस्तव्यस्त जकाँ सूतल अछि । ओकर झोरी किछु घसकल छैक आ किछु कागज सेहो आधा छिधा बाहर भेल । रमेश ओहि झोरी दिस जेना क्रुद्ध भ' क' देखैत छैक ! ओकर हाथ महक झोरी हिलि रहल छैक । झोरी खाली छैक तेँ हिलि रहल छैक ।

मुट्ठी मे मोचड़ायल-तोचड़ायल फिरिस्त छैक कवितावला । तकरा ओ अनेरे आर मचोड़ि रहल अछि ! ताहि बीच निहुँरिक' फेर चीन्ह' चाहैत छैक पड़ल युवककेँ । एहि बेर चिन्हियो लैत छैक । 'ई तँ वैह अमर थिक' से भाव अबैत छैक ओकर मनमे ! तखन ओकरा जगबै छैक)

रमेश–रौ उठ आब ! भोर भ' गेलैक चल, घर चली । युवक हड़बड़ाक' उठि जाइत अछि ! रमेशकेँ किछु घबड़ायल जकाँ देखैत रहि जाइत छैक । ओकर मुद्रासँ बुझाइत छैक जेना ओ किछु भयभीत हो ! मुदा जेँ कि रमेश ओकर कन्हा छुबैत छैक कि ओकर मनक भय समाप्त भ' जाइत छैक । आब ओकर आकृति सामान्य भ' जाइत छैक जेहन तुरन्त सूतिक' उठल लोकक रहि सकैत छैक । मुदा, चलबाक बदला रमेश ओतहि बैसि जाइत छैक, ओकरा लगमे । ओकर कागज-पत्रकेँ देखैत व्यंग्यसँ हँस' लगैत छैक किछु भयाओन लागि सक' बला हँसी फेर तुरन्त जेना ओकर हँसी मिझा जाइक)

रमेश–कय ठाम द' चुकल छेँ इन्टरव्यू ?

युवक–(एक क्षण ओकरा विस्मयसँ देखैत चुप रहैत छैक)

रमेश–कतेक ठाम भाइ ?

युवक–एक सय छओ ठाम (ओ अविचलित गम्भीर अछि)

रमेश–आब की सोचैत छेँ ?

युवक–रिवाल्वर आ कि रेलक लाइन । (ओ खूब तीक्ष्ण स्थिरतासँ कहैत छैक।)

(रमेश व्यंग्यसँ, क्रोध आ अपनत्वसँ ओकर हाथ ध' क' भावना देखैत छैक आ जेना मने-मन कोनो निश्चय करैत अछि)

रमेश–सुन, झोरीसँ सभटा कागज-पत्र बाहर कर तँ !

(युवक एक क्षण अज्ञानी अबोध जकाँ रमेश दिस तकैत रहैत छैक । तखन फेर कहैत छैक रमेश) बाहर कर सभ कागज । हमरा लग दियासलाइ अछि ।

युवक–(एक क्षण मोह आ चिन्तासँ हड़बड़ायल जकाँ) एकरासभकेँ डाहबै की ?

रमेश–हँ । एकरा सभकेँ जरा दे । माया धिकौक ई सभ । एकरासँ बच ने तँ आरो गसियाक' ध' लेतौक !''

(रमेशक कहबामे किछु तेहन प्रभाव बुझाइत छैक जे युवक विवश भावसँ झोरीमेसँ वस्तुसभ बहार कर' लगैत अछि । वस्तुसभकेँ बहार करबाक काल ओ किछु तेहन साकांक्षा बुझाइत अछि जेना कि ओहि वस्तु-जातमेसँ कोनो विशेष वस्तुकेँ बचयबाक चिन्तामे हो । रमेश धरि-गम्भीर नजरिये ओकरा देखैत जा रहल छैक ! वस्तु, सभ एकट्ठा भ' गेलैक अछि । रमेश अपन जेबीसँ दियासलाइक काठी बहार क' युवककेँ दैत छैक)

रमेश–ले, खरड़ ! (मुदा, युवक विचित्र असमंजसमे दयनीय जकाँ भ' जाइछ)

(ओ हिचकिचाइत अछि । रमेशकेँ देखैत अछि । फेर जेना कतहु नहि देखैत अकस्मात् कठोर भ' जाइत अछि आ बड़ स्वभाविकतासँ सलाइ ल' क' खरड़ लगैत अछि । ओकर आगिक जीहसँ कागजक एकटा' कोन छुआ दैत छैक । कागज जर' लगैत छैक । ओहि आगिमे ओ

बहार क' क' क्रमशः कागजसभ देने चल जा रहल छैक । एही चेष्टामे ओ किछु ताकियो रहल अछि, जकरा ओ डाह' नहि चाहैत अछि । तखने ओ एकटा डाइरीकेँ खूब सावधानीसँ उठा लैत अछि । फेर एकटा लाल चूड़ी उठबैत अछि, जकरा ओ डाह' नहि चाहैत अछि । तखने ओ एकटा डाइरीकेँ खूब सावधानीसँ उठा लैत अछि । फेर एकटा लाल चूड़ी उठबैत अछि । फेर दु-तीनटा लिफाफ निकालि निकालि क' रखैत अछि जाहि कागजपर यत्नपूर्वक खूब अक्षर बना-बनाक' लिखल पता-ठेकाना छैक आ कात-करोटमे फूल-पातक चित्र । लत्ती-फत्ती बनाओल । ओहि सभकेँ ओ खूब नीक जकाँ राख' लगैत अछि । रमेश देखि रहल छैक । ओकर आँखिमे मात्सर्य छैक । फेर ओकर आँखिमे क्रोध भरि जाइत छैक । ओकर आकृति तमसा जाइत छैक । दुनू गोटेक मध्य जरैत कागजक आगिसँ दुनू आकृति लाल-लाल बुझाइ पड़ैत छैक । आँच उठिये रहल छै । सभ कागज जरि गेलाक बाद पुछैत छै रमेश ओकरासँ)

रमेश--ई की छीक ?

युवक--चूड़ीक फान । (ओकर स्वर लाजेँ सहमल आ निराशासँ टूटल-सन छैक)

रमेश--(व्यंग्यसँ, किंचित हँसैत । परंच जेना ओकरा नहि कहिक' स्वगत बाजि रहल हो) अज्ञानी, जीवनकी तारा छोड़ि देतैक ?

(रमेश हेरायल जकाँ चुप भ' जाइत अछि । फेर जेना जागि उठय)

रमेश--ककर चिट्ठीसभ छैक ई ?

युवक--(माथ निहुँराक' चुप भेल रहैत अछि)

रमेश--ककर चिट्ठी थिकैक ?

युवक--(चुप)

रमेश--(क्रूरतासँ) द' दही एही आगिमे एकरोसभकेँ । एहि आगिमे ई चूड़ी। (फेर युवककेँ देखैत) आ ओ की छीक ? (झपटि लैत छैक ओकर डाइरी । युवक घबड़ा जाइत अछि । रमेश पन्ना उनटबैत छैक । युवक चिन्तित आ आशंकित अछि जे कतहु एकरो ने डाहि देहय ई ? मुदा रमेश एक एक टा कोनो पृष्ठपर पढ़' लागल अछि)

''जाहि अरिपनकेँ खण्ड-खण्ड क' क'
जा रहल छी हम,

से बड़ पुरान आङनमे देल गेल छल ।
से हमर माँ, हमर भूख आ हमर
मोलायम कविता थिक ।
बेसीकाल अन्तर्हीनता आ सुरक्षामे पोसल गेल अछि ।
तेँ अहाँक नाम बदलै छी मित्र !
हम अपन नाम-सम्बन्धक अस्तित्व काटिक'
जाहि बाटपर चल' जा रहल छी—ओत'
किछु आने जरैत अछि धह-धह । राति दिन अभावक
ऊँच अगियासी, चिनगी सभ ।
ओत' नगीना कयल चमचम थारीमे
मोलायम फुलकी रोटी नहि सेरायल करैत अछि ।
से सभ हम जनैत छी
तेँ अरिपन खण्ड-खण्ड करैत छी
आब अपने मनक आकाश
बुट्टी-बुट्टी काटिक' बँटैत छी ।
पसारि दैत छी अहूँसँ फराको अपन पिया
आब हमरासभ अरिपनमे नै
अपन स्पंदनमे सम्मिलित होयब ।
संभव हमरासभ-सन
बहुत रास, बहुत अपन दोस्त होयत ।
तेँ अहाँक शब्द 'सह-अस्तित्वक बोध'
आरो आयुर्दाक सङ अहाँकेँ आपस ।
आब हमरा कोनो फूल नहि चाही
कोनो वैयक्तिक संज्ञाक कृपाक
आब हमरा सम्पूर्ण पलाश-वन चाही
ओही पलाशक बन ले' हमर ई पयर
अरिपनकेँ धङैत चल जा रहल अछि ।
आङन बड़ पुरान, रोगाह आ जर्जर-पुरान भ' गेल छल ।
अहाँक जगलाक बाद जे किछु होयत नव,

वैह अहाँक–हमरालोकनिक सभक होयत ।

(रमेश चमकैत आँखिसँ देखैत छैक । अमरक आकृतिपरसँ जेना सभटा चिन्ता किछु सेकेण्डक हेतु मोटा गेलैक अछि । अपन कविताकेँ रमेशक मुँहसँ पढ़ल जाइत सुनिक' जेना स्वयं मनमे नव अर्थक बोध होब' लगैक । ओ मुग्ध भ' क' देखैत रहैत अछि । आँच एखनो उठि रहल छैक । रमेश डायरीक एक-दूटा पात आर उनटबैत छैक तथा पढ़' चाहैत छैक । फेर अकस्मात् जेना चेतिक' अपनेपर तामस करैत बाजि उठैत अछि)

रमेश–नहि, हमहूँ भरिसक कविताक मोहमे सकपंज भेल जा रहल छी । एकरो एहीमे डाहि देब' पड़त । जरा दे । नहि पढ़ब अगाँ ।

(डाइरीकेँ खूब आक्रोशक मुद्रामे फाटक द' बन्न करैत अछि ओ । आ बिना कोनो तारतम्यक रमेश डायरीकेँ आगिमे देब' चाहैत छैक । युवक शीघ्रतामे चिचिआय लगैत अछि आ ओकर हाथसँ डाइरी छीन' चाहैत अछि । रमेशसँ बेस झिकझोरी होब' लगैत छैक । परंच अन्तमे युवक छीनि लैत छैक ! आ फुर्तीसँ उठि जाइत अछि । तुरन्त साहसपूर्वक ओकरा हथियाक' सम्हारैत अछि आ लंक लागिक' पड़ाय लगैत अछि ।)

रमेश–नहि, हमहूँ भरिसक कविताक मोहमे सकपंज भेल जा रहल छी । एकरो एहीमे डाहि देब' पड़त । जरा दे । नहि पढ़ब अगाँ ।

(डायरीकेँ खूब आक्रोशक मुद्रामे फाटक द' बन्न करैत अछि ओ । आ बिना कोनो तारतम्यक रमेश डायरीकेँ आगिमे देब' चाहैत छैक । युवक शीघ्रतामे चिचिआय लगैत अछि आ ओकर हाथसँ डाइरी छीन' चाहैत अछि । रमेशसँ बेस झिकझोरी होब' लगैत छैक । तुरन्त साहसपूर्वक ओकरा हथियाक' सम्हारैत अछि आ लंक लागिक' पड़ाय लगैत अछि ।

(एक क्षणक लेल रमेश उत्तेजनामे ओकरा दिस देखैत रहैत अछि । फेर खूब तेजीसँ ओकरा दिस दू-चारि डेग दौड़ैत अछि । फेरो ठहरि क' किछु सोच' लगैत अछि ' आब ओ पराजित जकाँ विचार-मग्न भ' क' ठाढ़ रहैत अछि आ कोनो चेष्टा करबाक लेल हाथमे जेँ कि संचार करैत अछि कि ओकर बामा हाथ बोझसँ लादल अनुभव होब' लगैत छैक । ओ जेना एक्के ठाम ठाढ़ भेल बहुत बेसी चंचल भ' जाइत

अछि । ओकरा अपन हाथमे लटकल झोरा मन पड़ि जाइत छैक । तखन तत्काल जेना किछु सोचैत ओहि युवककेँ मन पाड़ैत ओतहिस गद्दह कर' लगैत छैक)

रमेश–रौ भाइ, रौ ठहरि जो रौ ! रे तोँ कय साँझसँ खयनो नहि छलेँ-रे' ! थम्हि जो रे भाइ ! थम्हि जो'' ! तोँ बड़ दुब्बर लगैत छलेँ....घुरि ताक तँ रे....

(रमेश सेहो ओकर पाछाँ पाछाँ खूब तेजीसँ जकाँ बढ़' लगैत छैक । ओ बड़ी दूर आ बहुत काल धरि दौड़ल अछि से प्रभाव दर्शककेँ देखाइ पड़ैत छैक–गम्य होइत छैक जखन कि एकसँ बेसी बेर रमेश दौड़िक' मंचसँ बाहर जाक' पुनः विंगसँ हकमैत आ व्याकुल पुनः मंचपर प्रवेश करैत छैक आ पुनः मंचसँ दौड़िक' चल जाइत छैक । एहि क्रममे एक बेर नेपथ्यमे रहि जाइत छैक ओ । मंचपर सम्पूर्ण सूर्योदयसँ पूर्वक दृश्य व्याप्त अछि । ई दृश्य दू प्रकारेँ बदलल जा सकैत अछि । एक तँ परदा खसाक' किछु मिनटक अंतरालक बाद अथवा प्रकाश-संयोजनाक किछु प्रयोगसँ ।)

रमेश युवकक पाछाँ-पाछाँ दौड़ैत रहबाक क्रियामे अपन हाथमे लटकल झोरीसँ घिचाइत-घिचाइत शिथिल भ' क' दौड़' लगैत अछि जे कि दृश्य नहि छैक । रमेशक एहि चेष्टा एवं शारीरिक मानसिक दशाक अभिव्यंजना अगिला दृश्यमे होइत छैक ।)

(ई दृश्य आरम्भ होइत छैक एकटा आभिजात्यसँ भरल पूरल अर्थात् विलासपूर्ण वातावरणसँ जगजियार उच्चवर्गीय ड्राइंग-रूममे ।)

चतुर्थ दृश्य

(अति समृद्ध प्रकारक लोकक सजल-सजाओल बैसक । किछु गोटे वेशभूषासँ परम संतुष्ट आ संभ्रान्त बैसल छथि । ताश भ' रहल छैक। किछु गीत बाजि रहल छैक मन्द-मन्द स्वरमे । कोठलीमे अपेक्षित प्रकाश छैक, किछु रङल प्रकाश । सभ ध्यानमग्न ताशमे लागल । केवाड़पर थपकीक आवाज होइत छैक मुदा मुक्काक । तखने रमेश हकमैत हुकमैत बेचैन जकाँ अबैत छैक । ओ घामे-पसेने तरबत्तर अछि। ओ ततेक हकनि रहल अछि जे नीक जकाँ ठाढ़ो नहि भ' पाबि रहल अछि–डगमगाइत अछि । ओकर एहि अप्रत्याशित आ अवाँछित उपस्थितिसँ सभकेँ जेना आशंकासँ चकबिदोर लागि जाइत । दू गोटे

तँ हड़बड़ाक' डेरायल उठिक' ठाढ़ भ' जाइत छैक । ओकरसभक आँखि उनट'-उनट' पर लागि रहल छैक डरेँ । सभ क्यो कोनोनाक' साहस कर' चाहैत अछि । मुदा एक दोसरा दिस ताकि क' मुँह बबैत अछि । सभक कंठ जेना मोका रहल होइक से भाव छैक सभक मुखाकृतिपर । कोनोना क' साहस करैत एक गोटे तोतराइत पुछैत छैक ।)

पहिल–क्के-क्के छ' तोँ ?

दोसर–बदमाश अछि ई ।

तेसर–अ-अ हाँ हँ'.......ए-एकर तला-तलाशी लिय' । (ओ व्यक्ति दूरेसँ अपन बहादुरी देखबैत अछि आ थर-थर कँपैत रहैत अछि । रमेश किछु कम, मुदा हकमिते रहैत अछि)

तेसर–दे-देखियौ औ, डाँड़-त'ड़मे कतहू छूरा कि पिस्तौल तँ ने छै औ ? (रमेश हकमि रहल अछि लगातार । थकनीसँ जेना ओकर आँखि झँपाय लगैत छैक क्रमश: से नजरिमे अबिते पहिल लोक भीतरसँ डेरायल रहितो जेना रोआबसँ कह' लगैत छैक)

पहिल–भ-भागह । भागै छह कि नै ? (रमेश सावधान भ' क' ओकरापर एक बेर आँखि दैत छैक)

रमेश–कतेक भागू ? कहाँ धरि भागू ? (एकाएक खूब कड़किक' कहैत छैक। तेना कहैत छैक जे सभ हतप्रभ भ' जाइत छैक । ओकरालोकनिक आधा-आधा आँखि एकरा दिस टङायल रहि जाइत छैक)

रमेश–हम तँ पड़ाइते आबि रहल छी । आ हौ भाई, एतहु तँ भगिते-भगिते आयल छी । हँफसैत मुदा सुभ्यस्त स्वरमे) अहाँ नहि जनैत छी, हम कत' सँ पड़ाइत आबि रहल छी, कहियासँ पड़ाइत आबि रहल छी ? अहाँलोकनिमेसँ क्यो नहि जनैत छी । कहू तँ, जनैत छी ? (एहि पूछबापर सभ एक दोसराक मुँह तकैत रहैत अछि बेवकूफ जकाँ । तखन एकटा साहस क' क' कहै छैक)

पहिल–नहि जनैत छी । तो-तोरा तैसँ मतलब ? हमरासभ किऐ जानू जे तोँ किऐ पड़ाइ छह ? हुँ ह, बहुत लोक पड़ाइत छैक ।

रमेश–हँ बहुत लोक पड़ाइत रहैत छैक, सैह तँ कहि रहल छी । बहुत लोक पड़ा रहल-ए । सड़कपर जाक' देखियौ । आउ ! आउ हमरा संग ! (ओ बढ़िक' एक गोटेक बाँहि धरैत छैक । आ घीचैत छैक । ओ

व्यक्ति अपन बाँहि छोड़ब' चाहैत अछि । रमेश ओकरा अपना दिस घीचैत छैक)

लोक–छो-छोड़ह हमरा । तो-तोरा जेल जाय पड़तह । जेल । बुझलह ?

रमेश–जे-ए-एल ! धुत् ! जेलक बाहरो तँ जेले छैक । अपितु, आरो भयावह आ नहि सहि सकबा योग्य यंत्रणा देब' बाला जेल ! (चुप्प, फेर जेना अकस्मात् मन पड़ि जा इक) ई हमर झोरी देखि रहल छी अहाँ ? हमर हाथमे लटकल ई झोरी ?

क्यो एक गोटे–(तमसाइत, दाँत कीचैत) नरकमे जाओ तोहर झोरी । गुण्डा ! तोँ तोँ एखने भागि जो एत'सँ । हम दरबानकेँ बजबैत छिऐक । एखने भगौतौक तोरा । बदमाश ! बुझाइ-ए बुझाइ-ए जेना जेलसँ पड़ायल कोनो खूनी होअय ! (क्रम छैक डेरायल)

रमेश–खूनी छी नहि । मुदा, तोँ जनैत छह ? आब तोरा चिचिअयलासँ किछु हायतह-जयतह नै । किछु नहि । (झोरी देखबैत) ई झोरी भरबेक चाही । (सोचमे पड़ैत जेना) हमर बच्चासभ दतमनि क' क' बैसल होयत । ओकरासभकेँ खाय ले' रोटी नहि छै घरमे । तोरा ओत' बहुत रास छह–कोनो कमी नहि छह । तोँ तँ रोटीक जुआ खेलाइत रहैत छह । हारैत छह, जीतैत छह । बाजऽऽह !

एक गोटे–रे-क्यो अछि ? कने जल्दी आबै तँ एम्हर ।

रमेश–(खुंखार जकाँ गरजैत) चुप रह ! चुप ! हमरा लग किछु नहि अछि । ने रिवाल्वर, ने छूरा । (डरबैत देखैत) मुदा तोरालोकनिकेँ हमरासँ डर कर' पड़तह । हम तोहर खून क' सकैत छियह । किछु आर निर्णायक घोषणा जकाँ करैत) हमरा एखने रोटी आ कविताक दूरी तय क' लेबाक अछि एही क्षण । एही ऐतिहासिक क्षणमे हमरा अपन स्त्री आ बच्चा सभ ले' किछु क' लेबाक अछि । फूर्ती करह । ई झोरी छह । तोहर लोक तोरे शराब पीबिक' धुत्त निश्चिन्त सुतल छह । तोँ जुआमे व्यस्त छह । ई झोरी लैह, एकरा भरह । हमर बच्चासभ रातियो किछु ने खयलक ।

एक गोटे–तोँ.....हम......रा धमका रहल छह ? हमरा तोँ....

रमेश–(एकटा सहजोर, माथा झन्न क' देब' बला थापड़ मारैत छैक ओकरा) नै, सत्ये कहैत छियह । ई झोरी अछि हमर । खाली अछि । तोँ सभ यदि सोचैत छह जे हम भीख माङ' लागब ऐ झोरी ल' क', तँ से

मनसँ निकालि लैह भ्रम । शरीरमे एक्को बुन्न तागति रहबा धरि, हमरा भिखमंगा बना देबाक तोरासभक ई व्यापक षडयंत्र सफल नहि होब' देबह । तोरासँ ल' लेबह । (ओ हाथक झोरी देखबैत छैक । सभ डेरायल-डेरायल ओकरा देखैत छैक आ 'की करी की नै करी' क असमंजसमे थरथराइत ठाढ़ अछि)

रमेश–देरी नहि करह । भूखकेँ सहल नहि होयतै । जल्दीऽऽऽ । (ओ सभ एकरा कहबापर डेराक' एम्हर-ओम्हर बढ़ैत अछि, मुदा निर्णय नहि क' पबैत अछि जे की करी ! सभ अपन-अपन जेबी हथोड़ैत अछि । मुदा, बहुत पाइ ने भेटैत छैक । ओ सभ व्यस्त अछि ।

रमेश–ई झोरी भरतैक–अन्नसँ अथवा द्रव्यसँ । एक्के बात छैक । भरक छैक झोरी । (ओकर एना भ' क' कहबापर ओ सभ गोटे विचित्र घबराहटि आ भयसँ फेरो हथोड़िया देब' लगैत अछि । ओहिमेसँ एक जन बड़बड़ाइत छैक)

एक गोटे–कहू तँ ! एत' गहूँम कत' सँ औतैक ! ई कोनो बात भेलै । एहि ड्राइंग-रूममे गहूँम कत'सँ औतै हौ ? विचित्र बात.....

रमेश–जुआमे जीतल-हारल रुपैया ताहीसँ भर' । भरि दे ओहीसँ । हमर पूरा परिवार रातियेसँ खेनाइ नहि खयलक अछि । नेना सभ दातमनि क' क' मुँह ताकि रहल होयत....। ओह ! (फेर खूब क्रुद्ध होइत) कहैत छियह, भूखकेँ सहल नै जाइत छैक....(ओ किछु तेहन आग्नेय आँखिये देखेत छनि जे सभ आरो डेरा जाइत छैक । एहि बेर एकर रुखिसँ ओ सभ ततेक त्रस्त भ' जाइत अछि जे करीब-करीब ठाढ़ोमे हिलिये रहल अछि । फेर कोनोना क' दावपर लगाओल रुपैयासभ ओकरा झोरीमे खसब' लगैत छैक । और विकराल हँसी हँसैत अछि।)

रमेश–आइ हमर रोटी आ कविताक दूरी तय करबाक अछि भाइसभ ! कतेक पैघ दूरी होइत छैक, तोरालोकनिकेँ नै पता । ककरो नहि । (किछु चुप्पी) भरिसक तोरालोकनिमेसँ बेसी गोटे रोटीकेँ नहि जनैत छह, ने कविताकेँ । (झोरी देखबैत) एहि लटकल झोरीकेँ देखैत छहक ?

एकगोटे–भेलह, भेलह.....ल' जा । भाग' एत' सँ । भा.....ग....।

[बिच्चेमे रमेश खूब दमगर चमेटा ओकरा मुँहपर मारैत डँटैत छैक ओकरा]

रमेश–निर्लज्ज ! तोँ कि हमरा दान द' रहल छेँ–खरात ? (स्वाभिमानसँ) हम तोरासँ छीनिक' ल' जा रहल छियौक । तोँ हमरा रोकि नै सकैत छेँ आक्रमण करबाक सभटा सरंजाम रहितो–तोँ हमरा रोकि नै सकैत छेँ तोँ आब ककरो रोकि नै सकैत छही । बुझलेँ ।

[ओकर मुखाकृतिपर मात्र क्रोध छैक ! भयानक क्रोधसँ । भरल ओकर निर्णय लाल प्रकाशक अपेक्षित संयोजनसँ जनाओल जयतैक । ओ सभ पाथरक मुरुत जकाँ ठाढ़ रहत–निष्प्राण भेल । तेहन मुरुत जकाँ जाहिपर मोट कजरी लागल छैक । प्रकाशसँ से प्रभव उत्पन्न होयतैक । रमेश पूरा मंचपर 'आतंक' जकाँ पसारि क' चल जाइत छैक । मंचपर दिनक प्रकाश पसरि जाइत छैक ।]

□